प्रकाशकीय

'वकील साहब' बढ़ती हुई मजदूर-जागृति और आंदोलन की, जनभाषा में लिखी गयी जीती-जागती तस्वीर है। हमारा मध्यम वर्ग, उच्च वर्ग का हथियार बना, निम्न वर्गका शिकार और दमन करने मे हिस्सा लेता है, फिर निम्न वर्ग भी अपने संगठन और एकता के बल से उच्च वर्ग का सामना करता है—यह 'वकीलसाहब' मे भली भाँति चित्रित किया गया है। जहाँ तक नाटकीय तत्व का सवाल है, डा० जोशी द्वारा लिखे गये नाटकोंके मुकाबले मे स्टेज-योग्य नाटक हिन्दी में शायद ही हों।

पात्र-परिचय

वकील साहब—बैरिस्टर मधुसूदन, एक मध्यमवर्गीय कांग्रेसपक्षी वकील

शर्माजी—एक वामपक्षी मजदूर कार्यकर्ता

भंडारीजी—एक्का मिल का मजदूर

भोला—वकील साहब का नौकर

खान—एक्का मिल का दरबान

रघुनाथ पणशीकर—मजदूर नेता

रमजानी—मज़दूर कार्यकर्ता।

[illegible] —निष्ठावान् गाँधीवादी, वकील साहब के श्वसुर

[illegible] —वकील साहब की पत्नी

[illegible] —रघुनाथकी पत्नी।

पुलिस सुप्रिण्टेण्डेण्ट, सिपाही, मज़दूर स्त्री-पुरुष आदि

वकील साहब

अंक पहिला

(स्थान—बॅरिस्टर मधुसूदन की बैठक का कमरा। सामने ठीक बीच मे भींतपर हसते हुए महात्मा गाधी का enlarged छाया चित्र। उसपर हाथ से कते हुए सूत की माला लटकी हुई है! पीछे की ओर बीच मे स्प्रिंगदार सोफ़ा रखा है। बाईं ओर अमेरिकन पाइप मॉडेल की कुर्सिया रखी है। दाहिनी ओर एक लकडी का तख्त है, जिसपर सफ़ेद खादी का तख्तपोश है। उसी प्रकार सोफा एव कुर्सियो पर भी खादी ही के अस्तर है। किंतु उनपर रंगविरंगी रेशम के बेलबुट्टे कढे होने के कारण उनकी शोभा विशेष बढ गई है। सोफे के सामने नीचे बिछे हुए बढ़िया गालीचे पर एक छोटा उम्दा लकडी का बना हुआ स्टॅड है, जिसपर पच्चीकारी किये हुए एक पीतल के कुंडे मे एक खूबसूरत गुलदस्ता रखा है। बाईं ओर दाहिनी ओर के पिछले कोनोंमें क्रमशः सूली पर चढे हुए ईसामसीह एव भगवान् बुद्ध की संगमरमर की बनी हुई प्रतिमाएँ ऊचे स्टॅडस् पर रखी हुई है। दोनो के बीच मे टेलीफोन का स्टॅड रखा है।

जब परदा खुलता है, तब वकील साहब शर्माजी से बातचीत

करते रहते हैं। शारदा उनके सामने खडी रहकर उनकी बातों को सावधानी से सुनती है।)

शर्मा.–वकील साहब, आप हमारी मुखालिफत जरूर कर रहे है। लेकिन इसके नतीजे पर तो जरा गौर कीजिये। काश्तकारों के खिलाफ पैरवी करना यानी एक अत्याचारी जागीरदार के हाथ ज्यादह मजबूत करना नहीं हुआ ?

वकीलः–देखिये, शर्माजी; मै काश्तकार और जागीरदार कुछ नहीं जानता। मुझे तो बस एक बात मालूम है—इंसाफ़! आप लगान-बन्दी करके जागीरदार को परेशान करना चाहते हैं,—बल्कि उसकी जड़ को उखाडना चाहते है—यह मैं समझता हूः सरासर अन्याय है।

शर्माजीः—अन्याय है! तो फिर जागीरदार का जनता को सताना, उसपर मनमाने अत्याचार करना, उसका शोषण करना—ये सब बाते फिर क्या न्याय्य है! आपका क्या जवाब है इसपर ?

वकीलः—मेरा जवाब है कि जो बाते कानून के ख़िलाफ हैं, वे बराबर अन्याय है। इसीलिये अगर कोई जागीरदार कानून की ख़िलाफवर्ज़ी करता है, तो इंसाफ जरूर यह कहेगा कि ऐसे आदमी को रास्ते पर लाओ।

शर्माः—तो फिर हम लोग और कर क्या रहे है ?

वकीलः—शर्माजी, आप लगानबन्दी कर रहे हैं। और लगान-बन्दी करना या करवाना, यह क़ानूनन् नाजायज है।

शर्माः—आप तो बस हरदम कानून कानून ही चिल्लाते हैं। क्या हरएक चीज़ आदमी को क़ानूनसे ही करना चाहिये ?

शारदाः—बापूने भी तो लगानबन्दी का आदोलन शुरू किया

था। तो क्या वह नाजायज था ?

वकील—कौन कहता है ?

शारदाः—तो फिर ?

वकील—लेकिन तुम यह नहीं समझतीं कि बापू की लगान-बन्दी किसी जागीरदार के खिलाफ़ नहीं थी। बल्कि वह ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ थी। इसलिये उनका ऐसा करना कतई नाजायज़ नहीं माना जा सकता।

शर्माः—और यह जागीरदार क्या है ? यह भी तो ब्रिटिश सल्तनत का एजेंट है।

वकील—आज है। लेकिन कल जब हमारी सरकार आ जायगी, तब वह हमारा हो जायगा। इसीलिये मै कहता हू कि जागीरदारो के खिलाफ आपने यह जो प्रचार करना शुरू किया है वह सरासर गलत है। यही वजह है कि मै जागीरदार की पैरवी आपके खिलाफ़ कर सकता हू।

शर्माः—ठीक है। कोई बात नहीं। मै आपके सामने ज्यादह क्या बोल सकता हू ? मै तो इसलिये आया था कि आपको कह-सुन-कर अगर बेचारे काश्तकारो का भाग्य सुधरता हो तो अच्छा। किंतु मालूम होता है उनकी किस्मत फूटी है।

वकील—इसमे मेरा क्या कुसूर ? मुझे तो कोई यह बतावे कि मेरी राह इंसाफ के खिलाफ मुझे ले जा रही है ?

शारदा—मगर, वकील साहब, जागीरदार का साथ देना—आपको यानी कॉग्रेस के मेंबर को वहा तक ठीक है ?

वकील—क्यो, ठीक क्यों नहीं ? जैसे काश्तकार कांग्रेस का मेंबर है, वैसे जागीरदार भी तो है। ऐसी हालत में आप यह कैसे

कह सकते हैं कि एक कांग्रेस-भक्त को हमेशा काश्तकार ही का साथ देते रहना चाहिये। महज काश्तकार होनेसे थोडे काम चलता है ? उसकी माँग कानून की आंख में जायज भी होनी चाहिये।

शर्मा:—और मान लीजिये कानून ही गलत हो तो ?

वकील:—हां, यह ज़रूर मुमकिन है। लेकिन ऐसे कानून को हमें बदलना होगा, और उसको बदलने के तरीके है। लेकिन आप जबतक मौजूदा कानून को मानकर चलते है, तबतक एक वकील के नाते मुझे यह जरूर देखना होगा कि उसकी कोई खिलाफवर्जी तो नहीं कर रहा है। बस, मेरा कहना इतना ही है। और मेरा यही एक उसूल है।

शर्माजी:—(उठकर) अच्छा, वकील साहब, माफ कीजिये। मैंने आपका समय व्यर्थ नष्ट किया।

वकील:—नहीं नहीं कोई बात नहीं। आप से मिलकर मुझे निहायत खुशी है। चलिये मुझे भी जरा काम है।

शर्मा:—शारदाजी, अच्छा नमस्ते। (शारदा विचारमग्न-सी खडी रहती है।)

वकील:—शारदा क्या सोच रही हो ? शर्माजी के नमस्ते का जवाब नहीं दोगी ? क्यो उनपर रूठ तो नहीं गई ?

शर्मा:—हं:, शारदाजी मुझपर रूठेगीं ? अरे साहब, उनकी वजह से तो मै आपतक आने का धैर्य कर सका। हमारे काम मे शारदाजी की कितनी सहानुभूति है—आप जानते नहीं। अच्छा, तो नमस्ते।

शारदा:— नमस्ते। फिर मै मिलूंगी आपसे कभी।

शर्मा:—ठीक है।

(वकील और शर्माजी जाते है। शारदा सोफे पर बैठती है और सामने टेबल पर रखे हुए 'हरिजन' को उठाती है। उसके पृष्ठ उलटती है। वह तख्त की ओर देखती है। किंतु वहां अपेक्षित वस्तु न होने के कारण वह अपने नौकर भोला को बुलाती है; भोला शीघ्र ही वहा आकर उपस्थित हो जाता है।)

शारदाः--अरे भोला; चर्खा कहा है रे ?

भोला.--चर्खा (कुछ सोचकर) चर्खा ओ अंदर मे कू होयगा! ओ कल साहब कू आप नहीं बताती थी, चर्खा कैसा चलाना और उसमे से सूत कैसा निकालना करके ?

शारदा.--बडा डॅम्बिस है रे तू, भोला!

भोला.--क्यो बाई क्यो ?

शारदा --नाम तो तेरा भोला है। लेकिन बडा काइयाँ है तू!

भोला --ऐसा क्या बात हो गया ?

शारदा --मै समझती थी कि तू हमारी ओर ध्यान नहीं देता। लेकिन तू तो हमारी एक एक बात को कौए की ऑख से देखता है, ऐं ?

भोला.--कौए की ऑख से देखता हू; इसीलिये ए घर, ए सब चीजे. आपकू देखने कू मिलता है। तुमारी ऑख से देखता हू, तो फिर या, ओ चौपाटी का मैदान दिखेंगा; क्या ? हा! सब चीज सफाचट।

शारदा --क्यो क्यो !

भोला --क्यो क्या ? अरे तुम्हारे दोनो के पाव मे लगा है भवरा। ए मीटिंग हुआ, वहा गया, ओ मीटिंग हुआ, वहा गया। उन्दो पधरा दिन ने जो.तुम गया था बहार. तो परसू आया।

शारदा—अरे मै जरा दिल्ली गई हुई थी।

भोला--काय कू ? भाड झोकने कूं ? काय कू घर छोड के जाता है तुम ? औरत लोगोंन्कू अपना अच्छा घर मे रहने कू होना। घरका काम करने कू होना। ओ तुम गया 'चलो-दिल्ली' करने कू, और इधर ओ बिचारा साहब, मारा मारा फिरता था न नहीं उसकू ठीक वखत पर खाना, नही पीना। अरे घर मे आदमी। औरत कू मंगता है, तो काय वास्ते ? यह बनाव।

शारदा---अच्छा-अच्छा, ससुरजी। तुम्हारा मिजाज तो बहुत ही तेज है। अच्छा हुआ कि मुझे ससुर नहीं है। नहीं तो मेरी क्या हालत होती कौन जाने ? अच्छा जा। वह चर्खा ले आ जल्दी से (भोला जाता है)।

(शारदा पुनः 'हारिजन' उठा कर पढ़ना चाहती हैं। किंतु सोफे पर मुडकर बैठते हुए उसकी नजर बुद्ध की प्रतिमा के स्टॅड पर रखे हुए एक खत पर पडती है। उसको जा कर पढती है। "All India Women's Confeience" हॅं। क्या है ? लिफाफा फाड़कर पढ़ती है। हु। अब फिर जाना पडेगा!

इतने मे भोला पेटी-चर्खा ले कर आता है। चर्खा ला कर वह तखत पर रखता है।)

शारदा:—ले आया चर्खा। जरा उसे खोल तो। और देख, जरा उस तकली को उस चक्कर की डोरी मे फॅसा तो।

भोला:—अपन नही बाबा इस फालतू चक्कर मे फॅसते।

शारदा:—चर्खे को तू फालतू चक्कर कहता है ?

भोला:—और नहीं तो क्या ? जिसकू काम नहीं, धदा नहीं, उसका वास्ते यह चक्कर अच्छा है। अमकू सिर उठाने कू फुरसत

नहीं मिलता, तो ए चर्खा कब चलायगा, बताव ?

शारदा—तू तो है बेवकूफ । अरे यह चर्खा बडे बड़े लोग चलाते है । खुद बापू तक हररोज़ सूत कातते है ।

भोला:—हम वही तो कह रहा है । अरे ओ बापू क्या और धापू क्या ? ये सब बडा लोग है । इनकू नई कोई काम, नई कोई धाम । तो बिचारा क्या करेगा ? मक्खी ओ मार नई सकता ? ओ कहता है न, जीव को नहीं मारना करके ! तो फिर क्या करना ? तो अपना चर्खा लिया, और ओ बुड्ढी अम्मा जैसा शुरू किया उसकू चलाना । चलाओ रे भाई चर्खा और कातो रे भाई सूत । जब मनमे आया काता, जब मन मे आया रख दिया । अपने मन का राज है । उनकू कोई पूछ्ना है ? और इधर अम चर्खा कातने कू बैठा और उधर काम नहीं हुआ, तो तुम ही अमारा काता हुआ सूत से अमारे गले कू फासी लगायगा—'यहा से चलो निकलो' कहके । समझा बाई । आपकू फुरसत है, तो यह काम अच्छा है । अम तो बिससे अलग रहने कू मगता है ।

शारदा—अच्छा तो भोला यह बता तुझको पहनने के लिये कपडा लगता है कि नहीं ?

भोला—ओ तो जरूर मगता है । अम ओ गाधी बाबा जैसा नंगा रहेगा, तो कैसा काम चलेगा ? अमकू नगा देखेंगा, तो तुम एक मिनट खडा रखेगा अमकू यहा ? ओ गाधी बाबा बडा अदमी है । इस-वास्ते उनकू सब धकता है । मगर हम वैसा करेंगा, तो तुम यहां से हमारा टिकट काट देगा । तो हम घर जायगा । उधर हमारा औरत कहेगा कि 'बाबा अब तू तूंबा हाथ में लेके और बदरीनारायण का रास्ता ले ।' क्या ? इस वास्ते हम खाना एक बार छोड देगा,

कपड़ा अमकूं एकदम अच्छा. जरूर होना। अमकू मिलना नहीं, ओ बात छोड़ो, क्या ? साला ए मेगाई और नौकरी ने अमारी जिंदगानी कू खतम कर दिया। मगर अमकूं बोत दिल में है, अम एक बार मलमल का कुड़ता बना करके और अपनी औरत कू पहनके बतायगा क्या ? कि हम दुनियामें कोई आदमी है—करके।

शारदाः—तो मतलब यह है कि तुझे कपड़ा चाहिये न ? तो फिर अपने हाथ से सूत कात कर उसे क्यो नहीं बना लेता।

भोला—ए चर्खा का कपड़ा! ओ खादी ? हट्! उसकू तो हम पास मे तक नहीं आने देंगा। कायकू ? अम तो ओ विलायत का फाइन मलमल मगता है। ये मोटा खादीका झूल पहन के अमकू क्या, ओ गांधी बाबाका बैल बनाना है कि साड ?

(एक call-bell बजती है।)

शारदा—देख तो, कौन है बाहर ?

(भोला जाता है।)

(शारदा चर्खा खोलकर और उसे जमाकर सूत कातना शुरू करती है।)

भोला—(आकर) ओ भंडारी साहब आया है, एका मील का मॅनेजर।

शारदा—बुला ला उनको यहा।

भोला—यहा कायकू ? बैठने देव विसकू ओ बाहर का ऑफिस का कमरा में। उससे अपन नहीं बोलना। कायकू, तुमकू मालूम नहीं; आ परसूं ए राक्षसने मीलका सैकडों कामगार कू मरवाया—अमारा औरत बोलता था। ओ मीलमे जाता है ना, तो विसकु सब वित्तबातमी मालूम है। आज चार रोज ओ तमाम मील में कामगार सप करके घरकू बैठा है।

(दोनो वातचीत करते हैं। इतने मे भंडारी अंदर आता है। भडारी मारवाडी ढंग की गुलाबी पगडी, बद कालर का रेशमी कोट और धोती पहने होता है। उसके हाथ की अगुलियो मे हीरे की अगूठिया होती है. तथा गले मे सोने की लड़ी। वह कद मे नाटा और तुदिल है।)

भंडारी—(आते ही हाथ जोडकर तथा एकदम ठिठक कर खडा होता है) ओ हो, हो, हो, हो, हो, हो। शारदा वेन !

शारदा—आइये, भडारी साहब ! वैठिये !

भंडारी—(जगह पर से न हिलते हुए) आज आप को देख कर ऐसा मालूम होता है कि साक्षात् शारदा देवी प्रकट होकर मेरे सामने विराजी है। आप चर्खा क्या कात रही है, मानो शारदा-देवी वीणा वजा रही हो !

शारदा:—(हँस कर) यह चार लकडी का चर्खा कहा और वह सरस्वती की वीणा कहा ?

भंडारी·—चर्खा चार लकडियो का हुआ तो क्या हुआ ? और वीणा कौन मे हीरे और जवाहरात की होती है। वह तूंबे और लकडी ही की तो होती है न। पर जहा उसे शारदादेवी ने हाथ मे लिया कि फिर क्या कहने है ? उस मे से वह सुर और राग निकलने है कि बस सुनते ही रह जाइये। हा. जनाव।

शारदा.—आपको चर्खे मे सगीत सुनाई देता है। और मैं हर रोज चर्खा कातती हू. लेकिन मुझे सिवा खरर् खरर् के उसमे कुछ नहीं सुनाई देता।

भंडारी—शारदा वेन यह तो अपनी-अपनी भावना का प्रश्न है. समझीं। "जाकी रही भावना जैसी, देखी प्रभु मूरत तिन तैसी।"

अं भावना पर ही तो सारा ससार टिका हुआ है। भावना न हो तो चारो तरफ अनर्थ नहीं होगा ?

शारदा:--कैसे ?

भंडारी:--यह लीजिये। यह प्रश्न आप हमसे पूछती है?

शारदा:--क्यो, क्या हुआ ?

भंडारी:---इसलिये कि आप परमपूज्य गाधीजी के आश्रम में जनम से रहीं। खुद बापूने आपको अपनी पुत्री की तरह पाला। और फिर आप भावना की बात हम जैसे मूरख लोगो से पूछती है ?

शारदा:- बापू का आश्रम क्या जादू का पिटारा है कि जहा कोई पहुचा और उस पर छू मन्तर की जडी फेरी कि हुआ वह देवता।

भंडारी:---शारदा बेन, तब तो मुझे कहना पडेगा कि आप नाहक बापू के आश्रम मे रहीं इतने दिन। अरे आपसे तो हम अच्छे कि कमसेकम बापू के असली महत्व को तो समझते है।

शारदा:---तब तो सचमुच आप बडे भाग्यवान् है। मेरे लिये तो बापू एक अच्छे आदमी है। इससे ज्यादह उनमे क्या बात है ?

भंडारी-- नहीं-नहीं, शारदा बेन, बापू को आदमी कहना यानी मदिर की मूर्ति को पत्थर कहने जैसा है।

शारदा---मदिर की मूर्ति पत्थर नहीं तो और है क्या ?

भंडारी--अरे राम ! राम ! राम ! (कान पर हाथ रख कर) शारदा बेन, आज तो आप गजब कर रही है।

शारदा--मै एकदम सीधी बात कह रही हू। इसमे क्या गज़ब हो गया ?

भंडारी---जिसको सारी दुनिया महात्मा और पैगंबर मानती है,

उसको आप मामूली आदमी समझती है। नहीं है यह ग़जब की बात ? अरे जिस अकेले आदमीने अंग्रेजी हुकूमत को—उस हुकूमतको, जिसपर हिटलर के बम ओर तोपें बेकार साबित हुई—भूकप की तरह डॉवाडोल कर दिया. वह क्या मामूली आदमी है ? और आप इस चर्खे को चार लकडी का बना हुआ मानती है। अरे जिस चर्खेने हिंदोस्तानमे बैठे-बैठे सात समदर पार की मैंचेस्टर की मीलोको यो चुटकीमे उडा दिया, उसकी ताकतका जरा अदाजा तो कीजिये, शारदा बेन ! दुनियाके तमाम पावर-हाऊस एक तरफ और सेवाग्रामके सतका चार लकडीका चर्खा एक तरफ ? योंही नहीं चर्खा हमारे राष्ट्रध्वजके सिरपर सवार हुआ. समझीं। कविने जो गाना बनाया है—"चर्खा चला चलाके लेगे स्वराज्य लेगे" उसको आप क्या बच्चोका गीत समझती है ? आहो हो, हो. क्या गजबकी ताकत हैं इस चार लकडीके हथियारमे ! जितना मै उसपर सोचता हू, उसमे उतनाही गहरा रहस्य मालूम पडता है।

शारदाः—चर्खे की ताकत को अगर आप खूब पहचानते है तो आप खुद चर्खा क्यो नहीं चलाते। क्यो फिर आप एक्का मील के मॅनेजर बने बैठे है।

भंडारीः— बस यहीं तो आपकी और हमारी नहीं बन पाती।

शारदा — क्यो ऐसी क्या बात है।

भंडारी — हम तो यह समझते है शारदा बेन कि जिसके मनमें सच्ची भावना है. उसको किन्हीं ढोग-धतरो की कतई ज़रूरत नही है।

शारदा —यानी चर्खा चलाने को आप ढोग-धतूरे मे शुमार करते है ? खुद बापू चर्खा चलाते है. तो क्या वे भी आपकी राय मे ढोगी हैं ?

भंडारी:—गांधी बाबा की बात अपन नहीं करते । वे तो दुनिया के सब प्रपचों से एकदम अलग है, क्या ? मै तो उन लोगों की बात कह रहा हू जो यह समझते है कि चर्खा चला लिया कि बन गये अटल गांधी–भगत । तो अपन ऐसी ऊटपटाग बात में विश्वास नहीं करते भाई।

शारदा:—इसका तो मतलब यही हुआ कि चर्खा कोई और काते, लेकिन चर्खेसे जो स्वराज्य मिलेगा, उसको अलबत्ता आप ले ।

(वकील साहब आते है ।)

भंडारी:—अहा आइये वकील साहब !

वकील:-—क्या बातचीत चल रही है !

भंडारी:—मैं शारदा बेन को यह बात समझा रहा हूं कि अगर आप सौ कोससे भी गगाजी का नाम भक्तिभावसे लोगे तो तर जाओगे। मगर रातदिन गगाजीमे रहनेवाले मगरमच्छ बेचारे योंही सूखे-सट्ट रह जाते है । सोचिये जरा । एक बात है । है न ? उसी तरह बापूकी चकरी बननेसे उनकी बातो का मर्म थोड़े ही कोई समझ सकता है । मगर जिसके मनमे बापूके प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति है; वह जनाब, मिलो को धड़ाके के साथ चला कर भी खादी-भक्त रह सकता है । हा, हा, व्यापार के सिलसिलेमे सोलह आनो झूठ बोल कर भी सत्यवादी रह सकता है । और मिलो मे दगाफिसाद करनेवाले गुंडे और बदमाश मजदूरो को मार कर भी अहिंसा का पुजारी रह सकता है । ठीक है न, वकील साहब ! क्या खयाल है आपका ?

वकील:—ठीक है, सोलहो आना ठीक है । खूब डोज पिलाया आपने । जब से शादी हुई तब से चर्खा-सूत-गाधी, चर्खा-सूत-गाधी करके भसाली-भाई बना रखा है । मगर आज इसे खूब जोड मिली है

(हँसते हुए) शारदा 'सेर को सवा सेर' आज मिला है !

शारदाः—(सूत कातना रोककर, वकील को) तो भसाली भाईको आप बेवकूफ समझते है ?

वकील.—(वकील और भंडारी एक दूसरे की ओर देखते है)। क्या बात कही है शारदा तुमने इस वक्त ? क्या पेच फँसाया है ?

भंडारी.—फिर मत कहना वकील साहब, कि हम ही बॅरिस्टर है। आज तो बगैर डोरेसे मुह सी दिया है शारदा बेनने ।

शारदा—आप तो हमेशा बापू और उनके साथियो का मजाक ही किया करते है। भला, यह तो बतलाइये कि शादी के वक्त बापूसे आपने जो वादे किये थे, उन्हे आप कहा तक पूरा कर रहे है ।

वकील.—लो, यह भी खूब कही। बापूके सामने हमने वादे किये थे, वे सिर्फ तुमसे शादी करने के लिये और तुमसे शादी कर ली।

शारदाः—और बापूको बेवकूफ बना दिया।

वकील—बस यही तो नासमझी है, शारदा। भला, मै बापू को बेवकूफ बना सकता हू ? और किसीने बनाया भी तो भला बापू बेवकूफ बन सकते है ? अर बापू तो इन सब बातो से और तुम हम सब से एकदम अलग हस्ती है।

शारदा—आप कुछ भी कहिये लेकिन वादा करके उसे तोडना अच्छी बात थोडे ही है ?

वकील—यही समझने की बात है—जो (हाथ का इशारा करते हुए) ऐसी साफ है, लेकिन कोई समझता ही नहीं ।

शारदा—(उत्तेजित हो कर) क्या नहीं समझता ?

वकील—(उसको उत्तेजित देख कर) खैर, समझ लो; मैंने गलती की। लेकिन ऐसे-ऐसे महापुरुष भी तो है, जो शादी के वक्त बापू

के सामने वेधडक प्रतिज्ञा करते है कि शादी के बाद वे और उन की स्त्री हिंदुस्थान स्वतंत्र होने तक ब्रह्मचारी बने रहेंगे। लेकिन अब जब-जब वे बापू से मिलते है, तो हरवक्त अपना एक नया माडेल उनके कदमोमे, हे, हे, हे, हे, करके पेश करते ही चले जाते है। और बापू बेचारे उन्हे देख कर आशीर्वाद दे ही देते है अब तुम्हीं बताओ भला कौन किसको बेवकूफ बनाता है।

(शारदा चुप रहती है। वकील शारदा के कुछ पास जाता है।)

वकील---खैर, तुम अपनी तो कहो। तुम्हींने बापू से वादा किया था न कि हम सादगी और सयम से जीवन बितायेंगी !

शारदा---हा, हा, तो फिर ?

वकील---आपके सयम का नतीजा तो यह है कि गये महिने का आप का नाटक और सिनेमाका खर्च २५० आया। आपकी सादगी की तारीफ मै कहातक करू ? आपकी साडियाँ खरीदते-खरीदते मै थक गया। धोबी बेचारा उन्हे धोते धोते थक गया। और लोग देखते-देखते थक गये। (शारदा तीव्र कटाक्ष फेकती है।) जिसमे अच्छा कमसेकम इतना हुआ कि मैने और तुमने आजीवन ब्रम्हचारी रहने का वादा नहीं किया। क्यों है न ?

(शारदा जो अभीतक दोनो की ओर देख रही थी, शरमाने का नाट्य करती है।)

भंडारी---अरे राम ! राम ! राम ! वकील साहब, आप तो बहुत सख्त है। देखिये शारदा बेन नाराज हो गई !

वकील---नाराज़ हो गई। तो लो यह स्तुति करता हू !

(हिंदी-संस्कृत-मिश्रित श्लोक हाथ जोड कर और आँख मूद कर पढ़ता है।)

'वदे शारदाम् । मम गृहे उजालाम् ।
वदे शारदाम् ॥ '
(स्वर ऊँचा कर के)
'बापू-बच्ची । मन की सच्ची । पर दिल की कच्ची बालिकाम् ।'

(इस बीच शारदा उठ कर चर्खा बंद करती है और विंग मे जाने को होती है । वकील उसको रोकता है ।)

वकील —है, है. देवीजी नाराज हो गईं । पहले अपराध पर ही इतनी सजा । अभी तो मुझे कई अपराध करने है ।

शारदा —जाने दो जी ।

वकील:—अच्छा. जाओ । लेकिन चाय-वाय तो लाओ । कहिये भंडारीजी कैसे रही । ह, ह. ह, ह ? कहिये, ये मजे आपके यहा कभी चखने को मिलते है ?

भंडारी —अरे साहब. हम जैसे अभागो को यह कहा नसीब ? हमारे यहा तो चूल्हा-चक्की, चौका-बासन. पूजा-पाठसे जब श्रीमतीजीको फुरसत मिले. तब कहीं हमसे बातचीत हो । और वह भी खुले आम नहीं । चोर की तरह । हौले-हौले, चुपके-चुपके । शायद कहीं कोई घरके बडोके कानो तक आवाज नहीं पहुच जाय। हमने तो शादी क्या की है ऐसा मालूम होता है कि महापाप किया हो । कहा आप की श्रीमतीजी और कहा हमारी औरत । हस और कागमे कभी जोड हो सकती है ?

वकील --अच्छा । ठहरिये ! जरा सेठानीजीसे कहने दीजिये इनको आपकी ये बाते । तब फिर देखना क्या मजा आवेगा ? ऐं ?

भंडारी —कौनसी बाते ?

वकील —यही कि शादी को आप महापाप मानते है और

सेठानीजी को आप कौए जैसी तुच्छ समझते है !

भंडारी:—अरे तो इसमें झूठ बात ही कौनसी है ? और आप उनसे कह भी दे तो क्या ? सच बात को काहे की ऑच ?

वकील:—हा ? अच्छा ! तब तो मुझे एक बार अपना प्रयोग करके उसको आजमाना ही होगा।

भंडारी—मैं तो कहता हू, आप शौकसे आजमाइये। कमसेकम एक बला तो टलेगी। हमारी शादी कब हुई यह भी मालूम है ? जब मैं पाच सालका था तब ! हमे शादीका आनद कैसे मिलेगा. भला बताइये तो।

वकील—तभी, मैंने कहा कि आप हर जलसेमें गानेवालीके एकदम नजदीक क्यों बैठते है ! और सबसे ज्यादह न्योछावरभी तो आपकेही हाथो से मिलती है उस नाचनेवालीको। हैं न ?

भंडारी—खैर, यह तो अपनी रसिकताका सवाल है। क्या ? लेकिन हा अगर पाप नाराज न हों तो एक बात बतलाऊँ ?

वकील—कहिये, कहिये ! नाराज होनेकी कौनसी बात है ?

भंडारी—यही कि आप शारदा बेनसे जरा, वैसा—मेरा मतलब है- आप समझही गये होंगे, थोडा सम्हलकर बर्ताव रखे तो कैसा हो ? यानी मै आपसे ज्यादह कुछ नहीं कहना चाहता। यही कि शारदा बेन अभी-अभी गाधी-आश्रमसे बाहर निकली है। और वह कहते है न कि नया मुल्ला बॉग जोरसे देता है। इसलिये मेरा मतलब यह है कि ज़रा उनकी भी सुन लेना चाहिये। है न ? हा !

वकील—अरे भडारी साहब, हमारा हिसाब-किताब तो ऐसा ही चलता है। यह तो प्रेम-कलह है। उसके बिना जीवनमें मजा कैसे आवेगा ? आप समझते है, क्या वह सचमुच नाराज़ हो गई है ?

भंडारी—हुई नहीं, तो शायद हो सकती है। मेरा मतलब है कि अभी वे जरा नाजुक फूलकी तरह है। जरा हलके हाथोसे उनको छूना चाहिये, है न ! और फिर शारदा बेन कोई कम हस्ती नहीं है! शहरकी तो वे सबसे बडी महिला कार्यकर्ता हैं ही। लेकिन तमाम हिंदोस्तानकी औरतोमें उनकी धाक है। ठेठ उस महिला महासभा तक मे उनकी अच्छी खासी वक़त है इसलिये, वर्ना कोई बात नहीं, वैसे तो चलताही रहता है। हा तो—

वकील—काहिये, आज कैसे कष्ट किया ?

भंडारी.—मै इसलिये हाजिर हुआ हूं कि आपको कुछ कष्ट दिया जाय।

वकील:—फरमाइये ! मै बराबर आपकी खिदमत मे हाजिर हूं।

भंडारी:—वकील साहब, एक केस है।

वकील—बेहतर है। क्या है मामला !

भंडारी:—मुख्तसर मे बात यह है कि इधर हमारी मील में वह साले कमीनिष्ट लोग बहुत घुस गये हैं और बराबर हमको परेशान कर रहे है।

वकील—कमीनिष्ट ? (जरा सोच कर) मैं समझा। आपका मतलब है कम्यूनिस्टोसे।

भंडारी.—हा. लेकिन मै उन्हे हमेशा कमीन इष्ट ही कहा करता हूं।

वकील—क्यो भाई ? बेचारे कम्यूनिस्टोपर आपकी इतनी खफा मर्जी क्यो ?

भंडारी:— आप उन्हे बेचारे कहते हैं ?

२

वकील:— तो ?

भंडारी:—हॅ., जरा उनके कारनामों पर गौर कीजिये और फिर कहिये। अजी जनाब, ये कम्यूनिस्ट आदमी नहीं है। बल्कि बड़े जहरीले कीडे है कीड़े। मै तो यह कहता हू कि इनके सामने कॉलरा के कीड़े हजार-गुना अच्छे। क्यो कि वे बेचारे सौ, दो-सौ आदमियो को ही सता कर रह जाते है। लेकिन इन कम्यूनिस्टों ने देशभर में हैजा फैला दिया है। जहा देखो वहीं हर सभा मे, हर सोसायटी में, हर मोर्चेपर कम्यूनिस्ट धरा ही समझो। काग्रेस मे कम्यूनिस्ट, मुस्लिम लीग मे कम्यूनिस्ट, औरतो मे कम्यूनिस्ट, मजदूरो मे तो कम्यूनिस्ट है ही। लेकिन जनाब चमारो और भंगियो में तक कम्यूनिस्ट लोग घुसे पडे है। मुझे तो कोई यह बतावे कि कम्यूनिस्ट कहा नहीं है ? ये पट्ठे कम्यूनिस्ट ऐसी जगह भी तो मिलते है, जहा हवा तक नहीं मिलती ? हा, जनाब। क्योंकि ये बंदे underground मे भी तो जाकर रहते हैं।

वकील:—हा तो आखिरकार बात शुरू कैसे हुई ?

भंडारी:—ऐसा हुआ कि हमारे मील मे रघुनाथ नाम का मजदूर है, आप तो शायद उसे जानते होगे।

वकील:—कौन, वह हमारा रघुनाथ ?

भंडारी:—हा, हा, वह पहले अपनी काग्रेस कमीटी मे क्लार्क था। अगस्त आदोलन में वह जेल मे भी तो गया था। तो वह हो गया है आजकल कम्यूनिस्ट।

वकील:—इतनी जल्दी कम्यूनिस्ट भी बन गया ?

भंडारी:—अरे जनाब वकील साहब, इन कम्यूनिस्टो के फेर में आने के बाद आदमी कैसी कैसी कुलाटे मारता है कि क्या कोई

कलावाज कुलाटें लगायगा। जब अगस्त आदोलन शुरू हुआ, तो जो कल रात तक काग्रेस के मेंबर थे, वे सुबह उठते ही देखो तो कम्यूनिस्ट वन गये। कहिये जनाब गिरगिट भी क्या इतनी जल्दी रग बदलेगा। तो यह रघुनाथ हो गया किसी तरह से हमारे मील मे नौकर।

वकीलः—और आपने उसे रख लिया!

भंडारी—हम तो यह समझते थे कि वह काग्रेस का आदमी है यानी आपका आदमी है। हमने सोचा वेचारा जेल से छूट कर आया है रख लिया। तो उस पट्ठेने आते ही हम पर ही चड्डी कसना शुरू की। जिस थाली में रोटी खाते हैं, उसी में पैखाना फिरते है। ऐसे है हरामखोर ये कमीने लोग! तो इस हजरत ने आते ही हमारे मील के मजदूरों को भडकाना शुरू किया। मुझे जब यह मालूम हुआ तब मैने उसे निकाल वाहर किया, आपने तब मील के वाहर काम करना शुरू किया। मजदूरों के जत्थे के जत्थे लेकर आप मील के वाहर गेट पर चाहे जैसे गदे नारे मेरे खिलाफ और सेठ जी के खिलाफ लगाने लगे। मैने जमादार से कह कर उनका माकूल इन्तजाम कर दिया।

वकील.—हु। आपने शायद शूटिंग भी तो करवाया था न।

भंडारी—मजबूर हो कर करना ही पडा। वर्ना हजारों की भीड को कैसे रोका जा सकता था।

वकीलः—कितने मरे और कितने घायल हुए?

भडारी.—सात आदमी तो एकदम खलास हो गये। और दस बारह को मामूली चोट आई।

वकील—हु। तो बताइये अब क्या किया जाय?

भंडारीः —जो भी कुछ किया जा सकता है, सब कुछ किया जाय। अपन तो बस एक बात जानते हैं, सांप तो मरे और लाठी साबुत बनी रहे। बस ! कुछ भी हो अपने को आँच जरा भर भी नहीं लगना चाहिये।

वकील.—लेकिन यह कैसे हो सकता है? आप खुद घरको आग लगाते हैं और फिर कहते हैं कि अपने को आँच नहीं लगना चाहिये। यह कैसे होगा। आखिरकार सच बात कैसे छिपाई जा सकती है।

भंडारीः—हः अगर सच बात से ही हर जगह काम चलता होता; तो फिर क्या हम ही कोई कम थे। फिर मुझे आप यह बताइये कि आपकी हमको जरूरत ही क्या थी?

वकीलः—तो आपकी राय में वकील का काम यानी सच को झूठ बताना यही है न!

भंडारीः—सच को झूठ बनाना तो है ही। लेकिन वक्त पडने पर झूठ को भी उन्हें सच बना कर साबित करना पडता है। जो यह नहीं करता वह वकील ही क्या?

वकीलः—आपका खयाल गलत है। यह वकील का काम नहीं है। वकील का काम है जनता को इंसाफ दिलाना, ताकि समाज में कोई बदअमनी या बदइंतजामी न फैले।

भंडारी—बिल्कुल ठीक है। समाज में बदअमनी और बद-इतजामी नहीं फैलने देना यही वकील का काम है न?

वकील— बेशक?

भंडारी—तो फिर, मै आपके सामने तबसे क्या रोना रो रहा हू। मेरा कहना क्या है? जरा समझिये मेरी बात को। ये कम्यूनिस्ट

हमारे समाज में जहां तहां बदइंतजामी फैलाते है। जहां देखो वहां हड़ताल कराते हैं। बिला वजह मजदूरों को उभाड़ते है ! हर जगह आप समझिये कि आग मूतते हैं।............ बतइंतजामी पैदा करने को ही तो ये लोग "इन्किलाब" कहते है। यानी सोचिये। बड़ी महत्वपूर्ण बात है। अरे, "इन्किलाब ज़िंदाबाद" नारे का वर्ना मतलब ही क्या ? मुझे कोई समझावें। .... और कहते क्या हैं पट्ठे कि इंकिलाब से ही हिंदोस्तान को स्वराज्य मिलेगा। हैं ? स्वराज्य मिलेगा। अरे, रूस की गुलामी मिलेगी गुलामी ! चोर कहीं के। जरा सोचिये तो।...... अरे हाय हाय करने से और खून-खच्चर करने से कहीं स्वराज्य मिलता है। जहां तुमने ज़रा भी गड़बड़ की कि वह अंग्रेज क्या चुप रहेंगे ? तोपों और मशीनगन से भून डालेंगे जनाब एक मिनट में। ... ... स्वराज्य की नस तो बस उस अकेले बापू ने ही पहचानी है। क्या बिलंदर खोपड़ी है, ऐं ? ओ हो, हो, हो ! मै मानता हूं तो सिर्फ़ उस एक ही आदमीको। उसने कह दिया लड़ाई तो होगी, लेकिन हाथ मे कोई हथियार न हो। कितनी बड़ी बात है। सिर्फ दो शब्द है: सत्य और अहिंसा; लेकिन, जनाब, ॲटम बम क्या काम करेगा जितना इन दो शब्दो ने उस जबर्दस्त अंग्रेजी हुकूमत को डॉवाडोल कर दिया है। महात्मा गाधी के सत्य और अहिंसा क्या हैं, बस ग़ज़ब की चीज है।

वकील —इधर तो आप सत्य और अहिंसा की तारीफ़ करते हैं और मिल में मजदूरों पर गोलियो चलवा कर उनका खून करते हैं ? यह आपकी दोहरी नीति तो भाई मेरी समझ में नहीं आती !

भंडारी —गुस्ताखी माफ कीजिये। सत्य और अहिंसा के बारे

में आपकी कल्पना क्या है? क्या वे खूटे है कि झट उनसे बैलको बांध दिया कि फिर हिलने की जरूरत ही नहीं? अरे भाई, बापू के सत्य और अहिंसा को कहीं इस तरह समझा जाता है?

वकील:—तो फिर कैसे समझा जाय उन्हे?

भंडारी:—अजी वकील साहब, सत्य और, अहिंसा बडे आदमियों के काम करने के तरीके है तरीके। और कोई तरीक़ा हरदम एक जैसा नहीं रह सकता। जैसा मौक़ा होता है, उसी तरह उसको मोड़ देना होता है। परसों ही आपने पढा होगा– हिंदु मुस्लिम दगे मे जब कांग्रेस ने गोलिया चलाई, तब महात्मा गांधीने क्या कहा: "गुंडों को मारो, खूब मारो और जी भरकर मारो! यही सच्ची अहिंसा है।" वही परसों उन कांग्रेस के श्रेष्ठी ने लेक्चर दिया तो क्या बढ़िया बात कही' 'अंग्रेजो के सामने सत्य और अहिंसा, मगर कम्यूनिस्टों जैसें देशद्रोहियो के साथ लाठी, डडा और वक्त पडे तो तोप और मशीनगन का भी इस्तेमाल करो! वकील साहब, आप है किधर? मै कोई गलत तो नहीं कह रहा हू न? कहिये क्या सोच रहे है आप?

वकील—मै यह सोच रहा हूं कि अच्छा हो अगर इस केस को आप किसी दूसरे के हाथ सौप दे। मै आपके फायदे की बात कह रहा हूं।

भंडारी—यह देखिये वकील साहब, हम है Businessmen हम अपने नफे-नुकसान को बखूबी समझते है। उस को समझकर ही तो आपके पास आये है।

वकील—अरे साहब, मेरे सिरपर आप क्यों ज़बर्दस्ती सेहरा बांध रहे है?

भंडारी--क्यो नहीं बाधे ? अरे, सब से पहले तो आप हमारे दामाद है। शारदा बेन बापू की पुत्री के समान है, और बापू का और हमारे सेठजी का संबंध तो आप जानते ही है, चोली दामन का साथ है। इसलिये आप पर हमारा हक है। और फिर आपको हमने M L. A. बनाया। चुनाव के दिनो मे रात को दिन हमने बनाया और अपनी तिजोरी मे मे पानी की तरह पैसा बहाया। आप इन सब बातो को इतनी जल्द थोडी भूल सकते है।

वकील --लेकिन इन सब बातो का मेरी वकालत से क्या ताल्लुक?

भंडारी--ताल्लुक क्यो नहीं ? गहरा ताल्लुक है। कम्यूनिस्टे की हरकतो का मुकाबिला करना कोई मामूली बात नहीं है। आज उन्होने एक हमारे मिल में हडताल की। कल जगह-जगह वे अगर इसी तरह हरकतें करने लगेगे. तो फिर आपकी और हमारी मौत नहीं हो जायगी ? मेरी बात को आप मामूली कनई न समझे। वह मेरी या सेठजी की अकेले की बात नहीं है। उसकी जडें बहुत गहरी है। वह हमारे तबके की बात है। यानी अगर आप उसको नजरदाज करते है. तो फिर ये किसान और मजदूर अपने को कच्चा खा जायेगे।

वकील--अजी भडारीजी, जब किसान और मज़दूरों का राज कायम हो जायगा तो फिर अपना क्या होगा ?

भंडारी--ह. किसान और मजदूर राज करेगे ? काहेका ? पत्थर का राज करेगे ? जिनको खाने-पीने का, कपडे-लत्ते पहनने का. बोलने-चालने का जरा भी तमीज नहीं, ऐसे जगली लोग भला राज चला सकते है ? जरा सोचिये तो। ऐं ? अरे जहा हमारे बडे-बडे नेता और खुद बापू को राज चलाने में हज़ारों

दिक्कते होती है, वहा हँसिया-हथौड़ा चलानेवालों की भला कभी दाल गल सकती है ?

वकील——अब रूस में किसान-मजदूरों का राज चल ही रहा है न ?

भंडारी——झूठ! बिलकूल झूठ और एकदम सफेद झूठ है। मुझे बतलाइये कि वह क्या नाम उसका, स्तालिन! क्या वह मजदूर है ? क्या लेनिन और मार्क्स मजदूर थे ? और खैर रूस मे कुछ भी हुआ, तो अपने को उससे क्या करना है ? रूस अपनी ओर से जाय न चूल्हे में! अपने को तो अपने देश की बात बोलना चाहिये। अपने देश में खूं-खच्चर करने की क्या जरूरत ? अरे खुद बापू जब कहते है कि मालिक और नौकर भाई—भाई हैं, तब उनमें जो झगड़ा पैदा करता है, वह गुडा नहीं है ? देखते नहीं है अमदाबाद मे कितने मील है और कितने मज़दूर है। लेकिन वहा मील-मालिक और मजदूर कितनी अच्छी तरह से रहते है। वहा मजूर-महाजन सघ है। क्या बढिया काम चल रहा है उसका ? अब ये खेतवाडी (बम्बई) के क्रेमलिंन मे रहनेवाले रूस के एजेंट कहते है कि मील मालिक और मजदूर अलग-अलग है। वे आपस में दुश्मन है— तो भला बताइये कि सिवा गुंडाई और बदमाशी के इन बातों मे कुछ रखा है ?

वकील:——तो फिर अपने कॉंग्रेस के नेता जो किसान मजदूर के बारे में बोलते है, उनके बारे में आपकी क्या राय है ?

भंडारी:——अरे वकील साहब, आप भी क्या खूब है ? आप उनकी बात का मर्म तो समझते ही नहीं!

वकील:——क्यो, क्यो ?

भंडारी:—बोलने में और करने मे फर्क हुआ करता है कि नहीं ?

वकील:—हा, हा !

भंडारी:—बस तो फिर अब मुझे यह बतलाइये कि आप जो बोलते है उसपर अमल करना ही चाहिये, ऐसी बेवकूफी क्यो की जाय ? नेताओंने देखा कि भाई किसान और मजदूर. बच्चों की तरह मचल रहे हैं. तो उन्हे समझाने के लिये कह दिया कि भई तुम्हारा ही राज होगा ! लेकिन क्या हमारे कॉग्रेस के नेता यह नहीं समझते ? क्या वे इतने बेवकूफ है कि किसान और मजदूरो का राज यानी गुडो और बदमाशों का नगा नाच होने देंगे? भला यह कभी हमारे नेता पसद करेगे ? कभी नहीं ! और जो लोग यह पसद करेगे, उनको हम लोग हरगिज नहीं मानेगे। बल्कि हम उनको कान पकडकर कॉग्रेससे चुटकी मे निकाल बाहर करेगे ?

वकील:—हा । तब तो आपकी ताकत बडी **कमाल** की है, भडारीजी । ऐ ?

भंडारी.—तब ? आप समझते क्या है ! यह काग्रेस,—काग्रेस है क्या ? हमारे हाथ की कठपुतली है। हम जिधर और जैसा उसको नचायेगे, वैसा उसको नाचना होगा, समझे आप। और ये कॉग्रेस के तमाम नेता आखिरकार है कौन ! सब के सब, छोटे से लेकर बडे से बडे तक **हमारे** गुलाम है। **हमने** उनको बनाया है। ये बडे-बडे मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर आखिर आये कहा से ? क्या वहीं ऊपर से टपक पडे। अरे. हमारी तिजोरियो से जब हमने पानी की तरह पैसा बहाया, तब कहीं ये बडे-बडे लोग आपको ऊर्ची ऊर्ची जगह दिखाई दे रहे है।

वकील:—इसका मतलब यह है कि अगर आप इन लोगों को अपने पैसों से मदत नहीं देते तो वे अपने जोर पर चुनकर शायद ही आ सकते?

भंडारी.—हाँ हरगिज नहीं आ सकते। हम सब लोगों में हमारी, हमारे पैसे की ताकत काम कर रही है। हम अगर चाहें तो एक कुत्ते को भी प्राइम मिनिस्टर बना सकते है और बडे से बडे प्राइम-मिनिस्टर को भी हम चाहें तो एक मिनटमे कुत्ता बना सकते है। समझे, वकील साहब। कहना तो नहीं चाहिये लेकिन बात चली है, इसलिये कहना पडता है. खुद बापू जो आज हिंदोस्तान और तमाम दुनिया मे चमक रहे है, वह किसके तेज से?

वकील—क्यो वे तो भाई स्वय-प्रकाश व्यक्ति है।

भंडारी—महज खयाल है आपका। वे तो चाद की तरह है। पूनो के दिन आपको चाद बडा भला जरूर लगता है। लेकिन क्या यह उसकी खूबसूरती उसकी अपनी है! अरे यह सब उस सूरज की रोशनी का प्रताप है, जो छिपे छिपे उसपर प्रभाव डालता रहता है। समझे। जहा सूरज ने अपनी रोशनी को खींच लिया, तो फिर उस चाद मे क्या रखा है? अमावस को किसी ने चाद देखा है? बताइये मुझे। बस तो वही बात है। जब तक सेठजी, तब तक बापूजी। क्या? और जब तक पैसा तब तक उनकी सत्य और अहिंसा। लो पैसा निकाल! तो फिर क्या ठन्-ठन् पाल! मदनगोपाल!!

वकील—बात तो भाई, वाकई बडी मार्केकी की है।

भंडारी—मार्के की यानी एकदम बंदूक का निशाना समझिये? हां। मै फालतू अक्षर एक नहीं बोलता। आप सोचिये इसको।

वकील—मै तो इन बातो पर कई दिनो से सोच रहा हू। लेकिन मुझे कोई हल ही नजर नहीं आता। शादी की, तबसे बापूने वादा करा लिया कि झूठा केस कभी नहीं लेना। हिंसा की बात को कभी तरजीह नहीं देना। इसलिये Criminal cases लेना ही छोड दिया है। और तब से खास तौर पर मै दीवानी की ही केसेस लेता हू। लेकिन उसमे भी अब मै देख रहा हूं, आप झूठसे नही बच सकते। उसी तरह, काग्रेस में भी दिन-ब-दिन सत्य और अहिसा को चलाना टेढी खीर नजर आ रही है। क्या किया जाय? यह सवाल है। इधर विकालत करते है. तो सत्य को छोड़ना पडता है। उधर काग्रेस मे रहते है, तो बापू की अहिंसा को तलाक देना पडता है। इन्हीं बातो को लेकर मुझमे और शारदा मे कभी कभी ऐसी उलझने पैदा हो जाती है कि वकालत करे या छोड़ दे. इसी पशोपेश मे मेरा दिमाग बुरी तरह फस जाता है।.

भंडारी—वकील साहब, बात असली यह है कि आपके वकालत छोड ने से दुनिया का भला होता हो तो मै कहता हू कि उसे सब से पहले सूली पर टाग दो। मगर उससे आप खाली अपनी चमडी बचाना चाहते हो तो फिर जरा बात वैसी हो जाती है। क्यो कि मान लो आज मै आपका मुवक्किल बनने आया और आपने मुझे दुत्कार दिया। तो मै कहूगा 'अपनी बला से। यह वकील नहीं लेता केस तो उसके जात भाई दूसरे है। उनके पास चलो।' क्या? मेहनताना ही जब देना है. तो फिर घुरहू को दिया क्या? और कतवारू को दिया क्या? हम तो बस एक बात देखते है कि अपना काम होना चाहिये। और यह निश्चित समझिये कि लोग अपना काम करवाये और हरगिज नहीं मान सकते। फिर आपकी अहिंसा और सत्य को

लेकर क्या चाटना है। सोचिये जरा मेरी बात पर। · · नहीं, नहीं ? विकालत छोडना, मैं समझता हू महज नामर्दी है।

वकील– नामर्दी ?

भंडारी—और नहीं तो क्या ? आप दुश्मन से लड नहीं सकते इसलिये घर मे पूछ दबा कर बैठ जाते हैं। तो इसे किस शब्द से वर्णन किया जा सकता है? और साहब, आप को यह केस अगर वैसे नहीं तो कमसकम मेरे लिये तो लेना होगा।

वकील—केस जब हाथ में लेना ही है, तो फिर आपके लिये क्या और किसी के लिये क्या ? उसको तो फिर हर हिकमत से जीतना ही लाज़मी है। उसमे अपने प्रेस्टीज का भी तो सवाल है।

भंडारी—यह बात। मैंने आपको अपनी बात तो यों ही कही। लेकिन असलियत में आप उसको जब लडेंगे, तो उसमें अपने देशप्रेम को बतलाने का भी पूरा-पूरा मौका मिल सकेगा। यकीन रखिये। इस केस को जीत लेने के बाद आपका नाम सारे हिंदोस्तान के बडे बडे नेताओं में शुमार हो जायगा।

(वकील हलकी हसी हसता है।)

भंडारी– आप मेरी बात को मजाक समझ रहे है।

वकील- –नहीं, नहीं। मजाक की क्या बात है इसमें ?

भंडारी—वकील साहब, मै जो बोल रहा हू, उसका एक एक अक्षर पत्थर की लकीर है। आप इसकी सचाई का जल्द ही प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेगे। ········हा, तो अब बाते बहुत हो गईं! (घडी को देखकर) और मुझे जाना भी है। यह लीजिये आपके लिये यह मिहनत पेशगी भेट है। (अपनी जेब से चेक बुक निकाल

कर और चेक पर दस्तखत कर के) यह पाच हजार का चेक है ।

वकील---पैसो की अभी क्या जरूरत है ? आपका केस करीब करीब मेराही केस जैसा है अब । उसमे मिहनताना क्या ?

भंडारी---आपकी उदारता के लिये मै बहुत कृतज्ञ हू । लेकिन मैं तो यही समझता हू कि पैसा आपके पास रहा क्या और मेरे पास रहा क्या, एक ही बात है । जब हमारे मामले को आपने अपना बना लिया तो फिर हम में और आप मे भेदभाव रहही कहा जाता है । हा. देखिये, मै अपने जमादार को भी साथ ले आया हू । उससे फिर आप जो कुछ खुलासा चाहते हो करवा लीजियेगा । (जोरसे बुला कर) अरे खान भाई !

(परदे मे) जी !

भंडारी---इधर आओ ।

(खान आता है ।)

भंडारी---देखो जमादार, ये अपने वकील साहब है (खान झुककर सलाम करता है ।) ये जो भी कुछ पूछें, उसका सही सही खुलासा कर देना, ऐ ? .. हा, अच्छी याद आई । यह देखिये, मामला तो आप अब लडेंगे ही । लेकिन एक बात ख्यालमें रखना है । क्या ? वह यह कि इस खान ने रघुनाथ और उसके साथियों को मारा । आप शायद कहेगे कि वह मजदूरोका मोर्चा लेकर गया था इसलिये मारा । है न ?

वकील---हा. हा !

भंडारी---नहीं. ऐसा हरगिज नहीं कहना है । तो क्या कहना है ? यह कि वह हिंदू-मुस्लिम फिसाद पैदा करता था । इसलिये मजदूरो को उसे सम्हालना पड़ा । यह खान. तो आप जानते ही हैं अपना

मुसलमान भाई है और रघुनाथ है हिंदू। तो यह बात सोलहो आना जम जायगी। क्या ? मै गलत तो नहीं कह रहा हू ?

वकील--हा, आ !

भंडारी--बात वही है। लेकिन उसको जरा यूँ मोड दिया कि झट अपना काम बन जायगा। क्यों है न ? कैसी जुगत बना दी है मैने ? इसीलिये वारदात होने के बाद मोटर ले कर मै पहले पुलिस सुप्रिंटेंडेट के पास पहुचा। और उसके हाथ मे दस हजार थमाये। कान मे मतर फूका और पहला काम यह करवाया कि रघुनाथ और उसके साथी दूसरे गुंडो को हिरासत मे ले लो, बस ! एक बार चिडिया अपने हाथ मे फॅसी कि उसको जाल बिछा कर उलझाना अपना काम है। अपना यानी खास तौर पर आप जैसे होशियार वकीलो का ! अच्छा वकील साहब, मुझे तो अब आज्ञा दीजिये। ठीक है न ? अच्छा, हा, शारदा बेन से मेरा प्रणाम कहियेगा। मै जरा जल्दी मे हू। और देखिये आपको इस मामले में पैसों की कतई फिक्र करने की जरूरत नहीं। एक चिट लिख भेजने की जरूरत है सिर्फ। जी हा, तो नमस्ते !

(वकील उस को जाते हुए देखता है। फिर वह खान की ओर मुडकर प्रश्न पूछता है। इतने मे शारदा वहा आ जाती है और चर्खा ले जाने के बहाने वहा खड़ी रह कर खान की बातो को सुनती है।)

वकील--क्यो, खान भाई, तो तुमने रघुनाथ को और उसके साथियो को मारा ?

खान--हा, हुजूर, अम तो जो साहब हुक्म देता है, वह करता है।

वकील—इन्हीं साहब ने तुम्हे मज़दूरो को मारने के लिये कहा था ?

खान—हा हुजूर ! अम पहले अरज कर चुका है यह बात। अम उनके मुहके सामने यह बात कहेगा।

वकील—अगर साहब कुछ नहीं कहते तो तुम क्या करते ?

खान—अम कुछ नहीं करता। अमारा क्या मज़दूरोसे दुश्मनी है ? जैसा अम आदमी है, वैसा ओ बी आदमी है। अम पेटका धदा करता है. वैसा ओ बी करता है।

वकील—तो क्या तुम यह सब माराकूटी, खू-खच्चर अपने पेट के लिये करते हो।

खान—बेशक ! मालिक अम को खाने के लिये पैसा देता है। इस वजह से वह जो बी कुछ कहेगा, वह सिर आँखो पे करना मगता है।

वकील— तो गोया इस मामले मे गुनहगार तुम नहीं हो। ऐ ?

खान—अम को कौन गुनहगार बना सकता है। अम तो अपना फर्ज अदा करता है। अम तो हमेशा ईमानदार है। गुनहगार कोई दूसरा है।

वकील—कौन, तुम्हारा मतलब है सेठजीसे ?

खान—आप बात को समझना है !

शारदा—वकीलसाहब, देखिये वह चद्रभागा बहन आई है। आइये चद्रभागाजी (चद्रभागा आती है। वकील उसको नमस्कार करता है।)

शारदा—यह रघुनाथ की पत्नी है।

वकील—(चौंक कर) कौन ? रघुनाथ पणशीकर ?

चंद्र —हां, उनको एका मील के मालिक और गुडों ने खूब मारा है। सात मजूर बंदूक से मर गये हैं। उनको भी हाथ में गोली लगी है। उनको मील मालिक ने जेल में बद कर दिया है। मै वहा गई थी, तो पुलीस मेरे को उनका पता तक नहीं लगने देती। अब क्या करना ?

वकील—रघुनाथ क्यो पीटा गया ?

चंद्र—वह मील मालिक अव्वल नबर का गुडा है। हमारे यहां से कहा कि आजकल मेहगाई बहुत है। इस वास्ते मजूरों का भत्ता बढाने कू होना। मजूर कू खाने कू एक वक्त पेट भरने तक नहीं मिलता। करके उन्होंने मॅनेजर से बोला; तो मॅनेजर ने उनकू पकड़ लिया। उनकू मदत करने के लिये दूसरा मजूर लोग आया। उन सबको बदूक चला करके कत्तल कर दिया। ऐसा हत्यारा है वह।

वकील—क्यो बहन, रघुनाथ कम्युनिस्ट हो गया ?

चंद्र—कम्युनिस्ट क्या ? वह तो मजदूर-सघ में है।

वकील—हा, हा, वही।

शारदा—वही क्या ? मजदूर सघ अलग और कम्युनिस्ट पार्टी अलग।

वकील—तो भी क्या ? दोनो एक ही है। मजदूर सघ में कम्युनिस्टों ही का बोलबाला है।

शारदा—इस से क्या ? और रघुनाथ कम्युनिस्ट हो भी गया तो क्या हुआ।

वकील—तुम बात को समझती ही नहीं हो, शारदा !

शारदा.—अच्छा, कोई बात नहीं। अपनी बात आप फिर बाद में समझाइयेगा। पहले तो आप इन चंद्रभागाजी की बात समझिये।

वकील:—रघुनाथ है कहाँ? अस्पतालमे?

शारदा—नही, उसे पुलिस ने हिरासत मे कर रखा है। पहले उसे वहाँ से छुड़वाइये।

वकील—(सोचते हुए) लेकिन यह कैसे होगा?

शारदा—क्यो! आप चाहेगे तो सब होगा।

वकील—(जोर से हँसते हुए) शारदा, तुम क्या समझती हो कि मै चाहे जो कर सकता हूं?

शारदा—हा, आप वकील हैं। आप इस काम को बखूबी कर सकते है। और आपको यह काम करना होगा।

वकील—लेकिन, शारदा, मीलके मालिकों का भी तो कुछ ख्याल करना होगा कि नहीं? अगर कोई दगा-फिसाद करके मील के काम को बद करवाता है, तो ऐसे आदमी को पुलिस गिरफ्तार करेगी कि नहीं? और उसको हम कैसे छुडवा सकते है?

चंद्र—उन्होने तो कोई दगा नहीं किया। उन्होंने तो खाली महंगाई-भत्ता मागा। दगा तो मील मालिकों ने किया और उसके गुंडों ने किया।

शारदा—बिलकुल ठीक है। यह बात सोलहो आना सच है।

वकील—तुम्हें क्या मालूम कि कौनसी बात सच है।

शारदा—मुझको भोलाने यही कहा।

वकील—भोला ने तुम्हे मील की बात कही और तुम उसे सच मानती हो!

शारदा—अच्छा, भोला की बात सच नहीं तो पूछिये उस

आदमी को। मेरे सामने वह यही कह रहा था। क्यों खान भाई, सच कहो दंगा रघुनाथ ने शुरू किया कि तुमने ?

वकील:—देखो, शारदा, उसको यहा सब के सामने यह बात नहीं पूछनी चाहिये।

शारदा:—क्यों ? सब के सामने पूछने से सच बात को कभी आँच लग सकती है ?

वकील:—तुम नहीं जानती, शारदा। वकील के यहा की बात अलग होती है और सच बात अलग होती है। मेरा मतलब तुम समझ ही गई होगी। हा ?

शारदा:—क्या समझ गई मै ? तुम विकालत से सत्य को ढॉकना चाहते हो ?

वकील:—तुम हो गई हो पागल शारदा ! अच्छा, ऐसा करो कि चद्रभागा बहन अभी तो तुम जाओ। फिर कभी आना तो देखेंगे।

शारदा:—क्या देखेंगे आप ? वह फिर क्यों आयेंगी ? उसकी बात सच है। उसको अभी देखना होगा आपको।

चंद्र:—शारदा बेन, रहने दो। मै तो जाती हूँ। (जाती है।)

शारदा:—चंद्रभागा ? चली गई। देखो। (जाती है।)

वकील:—अच्छा, खान, तुम अब जा सकते हो।

खान:—फिर मैं कब हाजिर होऊं।

वकील:—मै तुम्हें फिर बुलवा लूगा।

खान:—बहुत अच्छा (सलाम करके जाता है।)

(भोला डाक लाता है। वकील डाक को खोल कर पढना चाहता है; लेकिन मानासिक उद्विग्नता के कारण पढ़ने में असमर्थ रहता है।)

वकील.—भोला !

भोलाः—(आ कर) हां साहब !

वकीलः—शारदा को बुलाना तो इधर। (भोला जाता है)

शारदाः—(आकर) क्या है ?

वकीलः—यह देखो तुम्हारे लिऐ खत है। (शारदा उसे लेकर विना पढे ही जाती है।)

वकील.—शारदा !

(शारदा रुकती है. लेकिन वकील की ओर नहीं देखती)

वकीलः—(उठकर) शारदा; नाराज हो गई ?

(शारदा कुछ नहीं बोलती)

वकील. (उसके पास जाकर) देखो शारदा, तुम नाहक नाराज होती हो। तुम चद्रभागा को ऐसे वक्त लाई जब कि मैं भंडारीजी का केस हाथ में ले चुका था।

शारदा—(आश्चर्य से) क्या, आपने भडारी का केस ले लियाँ ?

वकील—हां।

शारदा—भडारी ने सात खून करवाये हैं। क्या आप उस हिंसा की पेरवी करेगे ?

वकील—भडारीजी के केस में हिंसा का सवाल महत्व का नहीं है, शारदा। उसमें मजदूरों ने जो हिंदू-मुस्लिम दंगा और हंगामा पैदा करके मील-मालिक को परेशान किया, यह वात खराब है। उसको कैसे वर्दाश्त किया जा सकता है ?

शारदा—हिंदू-मुस्लिम दगा किसने पैदा किया ?

वकील—मजदूरों ने।

शारदा—सरासर झूट है यह।

वकील:--तुम तो बगैर सोचे समझे कुछ का कुछ बका करती हो।

शारदा:--क्यों मै कुछ तो भी बक रही हू ?

वकील:--और नहीं तो क्या ? असालियत क्या है, तुम्हे क्या मालूम !

शारदा:--तो क्या चद्रभागा झूठ बोलती है ? क्या अखबार झूठ बोलते है ? सब दुनिया चिल्ला रही है, तो क्या वह झूठ बोल रही है ?

वकील:--हा, यह सब हो सकता है।

शारदा:-- कुछ भी हो, लेकिन तुम सात खून नहीं दबा सकते। उनकी विकालत तुम्हे नहीं करना चाहिये।

वकील:--क्यो ?

शारदा:--उसमें हिंसा है। वह असत्य है।

वकील:--(जोरसे हसकर) सत्य क्या है इसी का फैसला हम वकील को करना होता है। हमारा और काम क्या है ?

शारदा:--अच्छा, तो किये जाओ तुम अपना काम। हमसे आयदा बोलने की कोई जरूरत नहीं। (जाने को होती है।)

वकील:--शारदा, सुनो तो। (उसके पास जा कर) यह देखो यह क्या है। (उसे चेक दे कर) यह पाच हज़ार का चेक है। यह तुम्हारे ही लिये है। तुम इसको अपने लिये रख सकती हो। तुम्हें वह चद्रहार बनाना था न। चलो, उसके लिये अपन अभी आर्डर दे आवें।

शारदा:--मुझे ये पैसे नही चाहिये।

वकील--अच्छा, पैसे नहीं तो चंद्रहार तो लोगी।

शारदा:--चद्रहार की मुझे जरूरत नहीं।

वकीलः---अच्छा. चद्रहार नहीं तो यह चेक तो रखो।

शारदाः---कह दिया न मुझे कुछ नहीं चाहिये।

वकील---कुछ कैसे नहीं चाहिये? मै सब समझता हूं। अभी जा कर चद्रहार ले आऊगा, तो फिर तबियत तुम्हारी एकदम कली की तरह खुल जायेगी। वह पाच हजार का सोने का हार और उसके हीरे यों चमचम करेगे कि तुम्हारे मुह में पानी आ जायगा। और फिर उसे जब तुम पहनोगी तो क्या खूबसूरत लगोगी कि बस, तुम सचमुच शारदा देवी हो जाओगी। चलो, शारदा, इसे रखो। अभी चल कर अपन हार ले आवे।

शारदा---(उसके हाथ से चेक लेकर उसके टुकड़े टुकड़े कर डालती है।)

वकीलः---अरे शारदा. यह क्या कर रही हो?

शारदा.---कुछ नहीं, इन पैसे ने और पैसेवालोने तुम्हारे दिमाग को खत्म कर दिया है। (गुस्से मे चली जाती है।)

(वकील नीचे गिरे हुए चेक के टुकडों को उठा कर उनकी ओर देखता है। उसके बाद जिधर शारदा गई थी उधर जाने को होता है। लेकिन ज्यो ही उधर देखता है, त्यो ही महात्मा गाधी के चित्र पर उसकी नजर पडती है। वह वहीं वज्रमूढ़ हो कर वज्र-प्रतिमा सा खडा रहता है।)

परदा

वकील साहब

अंक दूसरा

(स्थान:––रघुनाथ पणशीकर का घर। सामने भींत पर विचार-मग्न महात्मा गाधी का छायाचित्र। पीछे की भींत से सट कर आड़ा रखा हुआ लकडी का एक तख्त, जिसपर एक मामूली दरी बिछी है। उसके सिरहाने लपेटा हुआ एक बिस्तर। इतस्ततः लोहे की तीन कुर्सियाँ भी रखी होती है।

जब परदा खुलता है, तब चद्रभागा तख्त पर बैठी रहती है। वह अपने दोनों घुटनो को अपने बाहुपाश मे बाध कर, ऊपर सिर को डाले रहती है। जब कुछ देरसे वह सिरको उठाती है, तब उसकी मुद्रा म्लान और उदास मालूम पडती है। उसका सिर दर्द करता है, इसालिये वह उसको दाबती है। अपने हाथ की मुक्कियों से उस पर आघात करती है। उसके बाल तेल न डालने के कारण बिखरे हुए है।

उसको एकदम कुछ विचार आया है। इस प्रकार वह सिरहाने के बिस्तर के नीचे दबे हुए एक पत्र को निकालती है। उसको पढ़ती है। जब पढ़ना समाप्त होता है, तब वह बडी मुश्किल से उठ कर तख्त के नीचे रखी हुई सदूक को खोलती है। उसमे से ढेर भर कपडे निकालती है, जिनमे मुख्यतः रघुनाथ के कोट और कमीज होते हैं। कपडे अधिकांश फटे होते है। किंतु उनमे से जो अधिक अच्छा होता है, उसे निकाल कर वह एक तरफ करती है।

शेष कपड़ों को वह पुनः संदूक मे बद करके रखती है। जिन कपड़ों को उसने एक तरफ रख दिया था, उन्हें उठा कर वह तख्त पर रख देती है। अपना सिंगारदान (जो कि एक मामूली डिब्बा होता है) उठा कर लाती है। उसमे से सुई डोरा निकाल कर उन्हें सीना चाहती है। उसको सुई मे डोरा पिरोने में बडी दिक्कत होती है। इतने मे भोला आता है।)

चंद्रभागाः—क्यो रे, भोला ? अच्छा आया। इस सुई मे ज़रा डोरा तो पिरो रे! तेरे से बनेगा भी, क्या रे ?

भोलाः—क्यो नहीं बनेगा ? अरे अम नौकरी करता है कि झक मारता है ?

चंद्रः—अरे तेरेकू ऑख से दिखता है कि नहीं क्या मालूम ? इसलिये पूछा मैने।

भोलाः—क्या हो गया मेरे कू नई दिखने कू ? अम क्या अंधा है।

चंद्रः—अधा नहीं है, तो भी तू अब पचास–साठ साल के ऊपर का आदमी होयेगा न ?

भोलाः—हा है, तो क्या ? उससे हम कभी अधा बनेगा ? अमकूं तुम ओ गाधी बाबा मत समझना, क्या। कायकू तो ओ बस महिना दो-दो महिना अपना फालतू भूखा मरता है। खाने कू मिलना है, पर नहीं खाना। यह भी क्या आदमी का बात है ? अम तो उनकू कबी आदमी नहीं बोल सकता, क्या ? ओ तो अमकू एकदम पागल का माफिक लगता है। क्या ? अरे देखो न, ओ फोटू मे। बिचारा एकदम नगा बैठा है। अरे, अम नई पढा, नहीं लिखा। मामूली नोकरी करता है, क्या ? तो बी अम कैसा बैल जैसा मस्त रहता है।

खाता वी है, पीता वी है, चार लोगो के जैसा कपड़ा वी पहनता है। सवी वात करता है। अरे जब भगवान् ने अपने कू कोई चीज दिया तो उसकू काम मे लाना कि नहीं? ए बताव अमकू! अगर तुम नहीं काम मे लाता है, तो भगवान् वी कहता है कि मरने देव साला कू। ओ फिर उसकू रोगी का माफक दुबला बनाता है, सूकी लकडी का माफक पतला बना देता, है, कोल्हू का बैल का माफक अंधा बना देता है, और जानवर के माफिक नंगा बना देता है। मरो साला। अरे तुम आदमी हुआ, चौरासी लाख योनी पार करके तुम आदमी का जनम लिया, तो कायकू? मरने कू। अरे साला अच्छा खाव, अच्छा पीव, अच्छा ओढ, अच्छा बिछाव और प्रेम से जिंदा रहो ना। यह क्या जीते-जी मुर्दा के माफक रहना साला। हेट्।

चंद्र.—तू बहुत वोलता है, भोला!

भोला —अम ओ कांग्रेसवाला के माफक खाली पीली वोलता नहीं है। अम कामरेड का माफिक पहिला तुमकू काम करके बतायगा। फिर बात बोलेगा। ओ तुम हमारे कू डोरा देव और तुम अपना हाथ में [illegible] दूर सुई कू पकड करके रखो। और देखो अम तुमकू एक झटका मे सुई मे डोरा आरपार निकाल के बता देगा। (डोरा हाथ मे लेकर उसको बेट देता है।) देखो. पकडा सुई तुमने ठीक। देखो. अम अब जादू करता है। एक. दो. तीन। (सीटी फूकता है।) लेव। खींच लेव डोरा।

चंद्र:—भोला. तू तो बडा दिलदार आदमी मालूम पडता है. रे। मैं तो समझती थी की तू अब हो गया बुड्ढा।

भोला —अब ए तो अपना अपना समझदारी का बात है। अरे

तुम अमकू बुड्ढा बोलता है, क्या ? लेकिन अम तुमको बुड्ढा बोलता है। अम तुमारा बात नहीं बोलता, तुमकू तो अम अच्छा पहचानता है। लेकिन ओ अमारा बाई है, उसकू हम बहुत समझाता है। अब देखो न। तुम किस दिन आया था अमारे यहां, कित्ता दिन हुआ ?

चंद्रः—११ तारीख थी उस दिन।

भोलाः—अम तारीख फारीख कुछ नहीं समझता। अम तो यह बोलता है कि ओ मंगलवार था। तो मंगलवार मगलवार आठ और आज है बुधवार। आज नौ दिन हुआ। इत्ते दिन मे अमारा बाईने मुंहमे एक दाना तक नहीं डाला।

चंद्रः—किसने शारदाबेन ने ?

भोलाः—और किन का बात बोलता हू जब ?

चंद्रः—मैने समझा कि तुम्हारी घरवाली ने।

भोलाः—ह., अमारा औरत नौ दिन खाना नहीं खायगा। कैसा बात करता है ? ओ मार मार के चद्दर का जैसा चपटा कर देगा। ए मत समझना।

चंद्रः— क्यों रे, तो क्या तू अपनी औरत को मारता है रे ?

भोलाः—अम सब कुछ करता है। जैसा मौका देखा वैसा करता है। कभी अम नाराज हुआ, तो अम मार देता है। कबी ओ नाराज हुआ तो अम बी अपना दो डडा उसका हाथ का खा लेता है। तुम तो हँसता है। अरे अम अपना अकेले का बात नहीं बोलता। सब का बात बोलता है। बोलो, तुम रघुनाथ को नहीं मारा ? अब कायकू नहीं बोलता ? अच्छा, जाने देव। हमारे यहा का बात लेव। अमारा बाई हमेशा अमसे बोलता है : ए आफिस कू सफा कर। कायकू, साहब नाराज होयेगा। ए बात कर, ओ बात कर, ओ साहब उसकू

बोलेगा करके। लेकिन, ए आठ दिन मे अम देखता है कि अमारा बाई, सरीखा कमरा के अदर बैठा रहता है। झक मारके ओ साहब अमारे ऑख के सामने हजार बार आता है! उसकू समझाता है कि जरा उठ के खाना खा लेव। लेकिन एक नहीं, दो नहीं। बात कू ओ बाई कान पे रखने कू तक तैयार नहीं! अब बोलो। अम कहता है सो ठीक है न?

चंद्र--अरे तो शारदाबेन को ऐसा करने कूं हो क्या गया?

भोला.--अपने कू तो उनकी बात का पत्ता तक नहीं लगता। ओ साला फाल्तू अगरेजी मे गिटपिट बोलता रहता है। (अंग्रेजी उच्चारणो को निरर्थक अक्षरो द्वारा जरा देर बोल कर बतलाता है।) अरे, अम बोलता है, ए क्या? अरे तुम आदमी जैसा सीधा बोल क्यो नहीं बोलता?

चंद्र--तो तुझको कुछ खबर नहीं कि क्या बात है।

भोला.--क्यो नहीं खबर है? अमारा नाम भोला है, इससे यह नहीं जानना कि अमारा सिर मे कद्दू भरा है। क्या? अरे ओ गिटपिट बोलता है, तो अम जरा भर बी नहीं सिटपिटाता। अम क्या करता है, जरा देर कमरा का बाहर चला जाता है, तो अम गया देख के, ओ अपना बोली मे बोलना शुरू करता है। तो अम झट से कान लगा के सब सुन लेता है।

चंद्र--यह तो तुम बहुत बुरा करता है।

भोला--अरे अम बुरा करता है तो उनका अच्छा के वास्ते करता है। समझा। तो अमकू ये समझ मे आया कि ओ सब तुमारा और रघुनाथ का वास्ते झगडा करता है। हमेशा तुमारा और रघुनाथ का नाम उनका मुँह मे आता है। करके अम आज चल के तुमारा

पास आया। तुम जरा चलके अमारा बाई कू समझाव तो ओ जरूर समझ जायगा। क्या ?

(खान आता है। भोला खान को देखते ही ऐसा चिल्लाता है, मानो वह अचानक शेर के पंजे मे फँस गया हो। वह भाग कर तख्त के नीचे छिप जाता है।)

खान:—कौन है ए आदमी ?

चंद्र—यह भोला है, वकील साहब के यहा का नौकर।

खान.—क्या हो गया इसकू इत्ता चिल्लाने कू और भागने कू ?

(तख्त के पास जा कर उसको लकडी से खदेड कर बाहर निकालता है। खान के इस व्यवहार से भोला की घबराहट और भी बढती है। उसके हाथ पैर और आवाज मे कॉपने के लक्षण स्पष्ट मालूम पडते है।)

खान—अरे, तू आदमी है कि हैवान ? क्या हो गया तुझ को, ओय ?

भोला:—ए, तुम अमारा मा-बाप हैं। अम तुमारी गौ माता है। अमकू तूम काय कू मारता है ?

खान:—अरे अम गाय कू तो मारता है। लेकिन तुमकू नहीं मारेगा। तुम क्यो नाहक घबराता है ? अम क्या जिन्द है कि देव है ?

भोला.—अरे तुम हमारा बडा भारी देव है।

खान:—सच ! तब तो तुमकू अम जरूर मारेगा।

भोला.—अरे नहीं जिंदा जिन्द है।

खान:—क्या बोला अमकू, जिंदा जिन्द है ?

भोला—अरे, नहीं बाबा, जिंदा नहीं तो मरा जिन्द सही। लेकिन हमकू तू जिंदा रख।

खान ---अच्छा तो खड़े रहो यहा पर। खबरदार, यहा से जरा भर भी हिला है तो। (चद्रभागा से) तुम अमको पहचानता है ?

चंद्र---हा ! तुम क्यों आया हमारे यहा ?

खान.---जरा सब्र करो। हम खुद कहेगा सब बात तुमसे।

चंद्र ---क्या. क्या बात है !

खान ---(अपनी जेब मे से एक लिफ़ाफ़ा निकाल कर चद्रभागा को पेश करता है।) ए देखो।

चंद्र ---क्या है इसमे ? किसने भेजा इसको ? (लिफाफे को खोल कर देखती है। यह क्या इसमे तो ये नोट है। किसने भेजे इन्हे ?

खान ---ए नोट हमारा मील का मॅनेजर ने तुम्हारा वास्ते खास भिजवाया है।

चंद्र.---(लिफाफे को गुस्से मे आकर उसके मुँह पर फेकती है) शरम नही आती तुमको यह लाने मे। हमारे आदमी पर गोली चलाता है और उनकी औरत के पास नोट भेजता है ? अमकू क्या दुकान मे बैठने वाली औरत समझता है ? खबरदार! अमसे अगर ऐसी कोई बात की है तो। तुम साठ साल का बुड्ढा हुआ। तुमकू ए बात नहीं समझता ? और तुमकू औरत बच्चा है कि नहीं ? अगर तुम्हारी औरत कू तुम्हारा दुश्मन पैसा देगा. तो तुम उसकू जिंदा रखेगा बोलो ?

खान — बेशक. मगर इसमे अमारा क्या कुसूर है।

चंद्र --अरे तुम आदमी नहीं है। ओ जानवर से भी खराब है। [illegible] कुत्ता भी अच्छा कि ओ आदमीकू तो नहीं काटता। लेकिन तुम [illegible] कू अपनी तमाम जिंदगी बेच दिया। क्या किया [illegible] बिचारा हमारा आदमी लोगोने ? क्या तुमकू मारा था, [illegible] किया था जो तुमने उनकू [illegible] के चूहा

और बिल्ली के माफ़क मार दिया। अरे तुम आदमी कू आदमी नहीं समझता। साडे तीन हाथ का आदमी हुआ, लेकिन कौडी की अकल नहीं। जाव, जाव, यहा से। फिर अमकू तुमारा मूँ मत बतलाना।

(खान विचारमग्न हो कर कुछ देर खड़ा रहता है।)

अरे तुम कू कुछ दया नहीं, धरम नहीं। मुसलमान हुआ, तो क्या तुमारा धरम आदमी कू मारने कू कहता है? हमारी मजदूर सभा मे बी कितना मुसलमान कामरेड हैं। मगर बिचारा कितना अच्छा आदमी है कि अम हिंदू हो कर के बी उनकू अमारा भाई से बी ज्यादा मानता है। ओ अमारा वास्ते खाना-पीना छोड़के रात रात और दिन दिन काम करता है। तुम, देखो तो, अमकू एकदम जंगली आदमी मालूम पडता है। कायकू खान और मुसलमान हुआ तुम?

खानः—(साँस लेकर) आज तुमने हमकू जितना बात बोला है, उतना अम अपना जिंदगी भर मे किसी से नहीं सुना। और दूसरा कोई होता, तो अम उसकू कच्चा खा जाता।

चंद्रः—अरे, तुमने हमारे आदमी कू खा लिया वैसा हमारे कू बी खा लेव। तुम क्या समझता है कि अम तुमसे कबी डरेगा, अरे अम सच्चा रस्ता पर है, तो अम दुनिया के मूँ में थप्पड मारेगा, फाड कर के। तुम्हारी तो बात ही क्या है।

खानः—बेशक! (कान पकडकर) हम को अब मालूम पडता है कि इस बात मे अमने भोत बडी गलती की है। जरूर आज मै खुदापाक के नजरों में गुनहगार हूं। मालूम होता है मैंने अपने दीन-ओ-ईमान का कोई ख़याल नहीं रखा।

चंद्रः—अब तक नही रखा, तो अब जा कर रखना, जाव।

अपने धरम को छोडना अच्छी बात नहीं।

खान:---अम समझ गया। अच्छा, अम अबी जाता है। मगर अम तुमको वादा करता है कि अम तुम्हारी बात पर जरूर ख्याल करेगा।

(जाता है।)

(भोला, जो कि अभी तक पत्थरकी मूर्ति की तरह खड़ा था, खान के जाते ही एक ठंडी सांस लेता है। वह वहीं बैठ कर अपना पसीना पोंछता है।)

भोला.—बाई, तुम नहीं होता आज. तो अम ओ बस वहां (आसमान की ओर दोनों हाथ की तर्जनी उंगलियों बतला कर) होता। (चंद्रभागा कपडों को लेकर सीना शुरू करती है।) अम ये सोचता है कि आदमी होने से औरत होना ज्यादा अच्छा। (चंद्रभागा उसके मुंह की ओर आश्चर्य की मुद्रा से देखती है।) अम सच कहता है। अम आदमी हो के खान के सामने बिल्ली की तरह रहता है और तुम औरत होके खानपर शेरनी का जैसा गुर्राता है। और ओ खान डर के भाग जाता है। करके अम औरत होना मंगता है।

(रमजानी बाहर से "बाई !" की आवाज देकर फिर अंदर आती है। भोला फिर भागने को करता है। किंतु रमजानी को देख कर वह रुक जाता है।)

भोला—ओ मेरे को क्या मालूम कि तू रमजानी है करके। मैं तो सोचा कि अभी ओ खान आया था, तो ओ कहीं वापिस तो नहीं आया।

रमजानी—कौनसा खान आया था यहां ?

भोला:—ओई इक्का मील का खान अपने आदमियों को मारा था ओ।

रम:—यहां क्यों आया था वह ?

भोला.—बाई कू पैसा देने कू आया था ओ भंडारी की तरफ़ से। क्यो है न, बाई ?

चंद्र:—(सीते हुए) हा !

भोला:—तो अम तो, ओ आया तबी सोच लिया कि अब अपन कू दुसरी दुनिया में चलने का है, क्या ?

रम:—तो फिर ?

भोला:—फिर क्या ? ओ बाई ने उनकू ऐसा डॉट पिलाया कि ओ चकरबंब हो गया। ओ चीं चीं चीं करके अपना सीधा रस्ता से चला गया। हू नहीं किया, कि चूं नहीं किया।

रम:—हू ! अरे वह शर्मा कहा है ?

चंद्र:—उसको मैने भेजा है बाहर। आता ही होगा।

रम:—और यह क्या कर रही है ?

चंद्र:—यह उन्होंने कपड़े मंगवाये है न, जेल में, तो उनको सी रही हूं।

रम:—ऐसा कीजिये, उन्हें तो आप मुझे दे दीजिये। मै उन्हें अपने दरजी कामरेड से ठीकठाक सिलवा कर रघुनाथ के पास भिजवा दूगा।

चंद्र:—अच्छा ! (कपडो की गठडी बाध कर रखती है।)

रम.—और यह देखिये, आपकी तबियत अभी ठीक नहीं है। इसलिये आपको अभी आराम करना चाहिये। डाक्टरने भी तो उस दिन यही कहा था न। आपको जो भी कुछ काम हो, आप मुझ से

कहियेगा। मै फौरन् उसे ठीकठाक करवा दूगा। आप दवाई लेनी हैं कि नहीं?

चंद्र.—हा. लेना है।

रम —तो पहले उसे लो। फिर दूसरा काम।

भोला —अच्छा. तो बाई। अब अम जाता है। हमारे कू बहुत देर हो गई। लेकिन अमारी बात का ध्यान रखना, ओ बाई कू समझाने का। (जाता है।)

(चद्रभागा अदर जाती है। शर्मा आता है।)

रम —क्यो शर्मा. किधर भागते फिरते हो दिन दिन भर. ए! यहा कौन आता है. कौन जाता है, कुछ खबर भी है कि नहीं तुमको?

शर्मा —क्या करे. बाई काम कहती है तो उसे करना ही पडता है।

रम —बाई के काम का तो बहाना बनाते हो और घूमते फिरते होगे होटल और सिनेमाओ मे, है न?

शर्मा — अरे भैया. माफ करो। सिनेमामे जानेवाले लोग तो अच्छे कि कमसेकम एक जगह आराम से बैठे तो रहते है। लेकिन यहा तो हमको सिनेमा मे खास पार्ट करना पडता है. भाई जान! कुछ खबर भी है? ऐसी मिट्टी-पलीत होती है कि कुछ मत पूछो।

रम —क्यो. क्या बात हुई ऐसी जो तुम्हे अपनी मिट्टी को पलीत करना पडा।

शर्मा — आज रातको मै बाहर सो रहा था। और बाई यहां [illegible] इस तरफ पर। तो रात भर कोई कराहती रही। मैंने एक [illegible] पूछा कि क्या बात है। कुछ नही बोली। उस तरह [illegible] कि [illegible] बात क्या है? [illegible]

ज्यादह हो तो डाक्टर को बुलाया जाय। तो पहले तो कुछ देर कहती रही: 'कुछ नहीं! कुछ नहीं' लेकिन मैं अडा रहा। फिर उन्होंने सोच कर कहा कि मुझे कामरेड रघुनाथ से खुद मिलना हैं। मैंने कहा कि आपकी तबियत खराब है। आप कैसे जा सकेंगी और? वहां आंपको कौन जाने देगा मिलने। क्योंकि रघुनाथ सात पहरों के अंदर जो बैठा है। लेकिन उनको बात समझ में नहीं आई। बच्चों जैसी रोने लगीं। कहने लगीं कि कामरेड रघुनाथ मर गया। हम लोग खालीपीली उनको बरगला रहे हैं। अब क्या करे? तो फिर मुझको एकदम खयाल आया और मैंने कहा: "अच्छा! अगर आप को उनके हाथ का लिखा खत ला दूं, तो कैसा?" उन्होंने कहा कि फिर कोई बात नहीं। अब मैं चला। कोतवाली में पहुचा: तो वहां कौन पूछता है। कान्स्टेबुल ने यों ही दुत्कार दिया। तब फिर मै गया अपने एक दोस्त के पास, और उसके जरिये एक कोतवाली के कान्स्टेबुल के पास गया, और उसको बड़ी मुश्किलसे समझाया। तब वह बिचारा गया जरूर, लेकिन उसकी भी दाल नहीं गलने दी। वह कहता था कि उस भडारी ने सब के मुँह पर सोने की चाबी घुमा कर ताले लगा दिये है। दिन के बारा बज गये। क्या करें? मैं तो काम किये बगैरे वापिस आने से रहा! उसको मैंने फिर से समझाना शुरू किया। वह बेचारा फिर से गया। बड़ी मुश्किल से उसने रघुनाथ से चिट्ठी लिखवा कर मुझ को ला दी। तब कहीं मैं यहां आया। और आप कहते हैं कि मै सिनेमा देखने जाता हूं। कहिये, कुछ ठीक है?

रम:—बाई को मै हररोज तो रघुनाथ की खबर देता हूं। तो भी उसको इतमीनान नहीं।

शर्माः—अरे, भाई तुम मजदूर सभा के प्रेसीडेंट जरूर हो। लेकिन हो तो प्रेसीडेंट आखिरकार मजदूरो ही के न? ज़रा दिल और दिमाग से काम लो। अगर आशिक-दिल को माशूक के सदेशों से तसल्ली मिलती होती, तो बेचारे मजनू और फरहाद के रजोगम. उनकी वे सितम की राते, तुम्हारी ऑखों में बेकार और बेमानी है। है न! बोलो।

(चद्रभागा अदर से आती है। वह रमजानी के लिये चाय का कप लाती है. जिसे वह उसके सामने कुर्सी पर रखती है। लेकिन कमजोरी की वजह से वह एकदम गश खा कर गिरना चाहती है। पर पास ही कुर्सी पकड लेने की वजह से सम्हल जाती है)

रम.—आप बहुत कमजोर हो गई है। आपको इसके बाद जरा भर भी हिलना नहीं चाहिये; आपको मेरी सख्त ताकीद हैं। जो काम हो मुझको या इस शर्मा को कह दीजिये : बस।

चंद्र—की तो सब काम करता है बिचारा। अमकूं यहा बहुत आराम है।

रम—तब आप रातभर क्यो कराहती रही?

(चद्रभागा कुछ नहीं बोलती। केवल अर्थपूर्ण दृष्टिसे वह शर्मा की तरफ देखती है।)

नहीं छूटेंगे. हम हरगिज काम पर नहीं जायेंगे।

चंद्र:—ओ तो अमकू मालूम हैं लेकिन ओ भंडारी और उसका ओ वकील पुलिस कूं पैंसा देके उनकू क्या मालूम ?

रम:—पैसेवाले आखिरकार क्या करेंगे ? यही न, कि रघुनाथ को फाँसी पर चढा देंगे।(स्वर ऊँचा करके) लेकिन आप क्या समझती है कि हम उसके साथी खामोश बैठ रहेंगे ? अपने कॉमरेडों के एक एक खू के कतरे का हम जबर्दस्त बदला लेंगे और जरूर लेंगे। इस पूंजीपति की जमात को हम तहस-नहस कर डालेंगे। उनकी जडों तक को उखाड कर हम दरिया की गहराई में दफना देंगे। ...आप हमारी ताकत को अभी पहचानती नहीं है। हम जितने भर भी दुनियां में मिहनतकश है, तमाम एक है। अगर दुनिया के किसी कोने मे भी किसी मेहनतकश को किसी सरमायादार ने सताया कि उस पर शेर के मानिंद उलटना यही मजदूर सभा का काम है।..... ....यह ठीक है कि दुनिया के मजदूर अभी जैसे चाहिये वैसे चेते नहीं है। यही वजह है कि इन सियारो की, पैंसेवालों की, जगह-जगह बन पाती है। मगर अगर मजदूरों की जमात कहीं एक बार चेती कि फिर देखना! यही सरमायादार, जो आज हमको सताते है, हमें जेल में डालते है और हम पर जुलमोसितम ढाते है, उनका नामोनिशॉ तक बाकी नहीं रहेगा। जो रूसमें किसान और मजदूरो ने किया. ठीक वही इकलाब दुनिया के कोने कोने मे होनेवाला है।.. जिन लोगो ने मजदूर सभा को बनाया, उन्होने इस मकसद को हासिल करने के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी है। .. .. आप तो खाली रघुनाथ ही की बात करती है। लेकिन उस दिन जो हमारे सात कामरेड शहीद हुए. उनका भी तो हमे ख्याल करना कि नहीं ?

उनके भी तो कुछ अरमान थे। .... . और यहीं, एक मजदूर सभा नहीं है। तमाम हिंदोस्थान में, और सारी दुनियामे मजदूरों की जमाते काम कर रही हैं; और हरवक्त, हर मौकेपर, उन्हें पूंजीशाहों की तानाशाही से टक्कर देने में हजारों की तादाद में अपने कॉमरेडों की जानें कुरबान कर देनी पडती है। वह किस लिये ? सिर्फ एक ही मकसद के लिये कि दुनिया में इसान आजाद बने, खुशहाल बने और सरसब्ज बने। .... इस मकसद को हमे कभी नहीं भूलना चाहिये। चाहे कुछ भी हो, हर मजदूर को अपनी पूरी ताकत से उसको हासिल करने के लिये कोशिश करना है। समझी आप ? ... हम जो आपको यहा आज फटेहाल मालूम होते हैं, तो इसका यह मतलब नहीं कि हम इन पैसेवालो के अत्याचारो के सामने सिर झुका देगे। याद रखिये, हम मे से एक एक अपने खू का आखिरी कतरा रहने तक इन पूंजीशाहों से लडेगे और उनको परास्त करेगे।

जाती है।)

रम:—शर्मा, तुम कोर्ट मे गये थे कि नहीं ?

शर्मा:—वहीं से तो आया हू मै।

रम.—कहा तक आया मामला ?

शर्मा:—मामला तो चल रहा है। लेकिन आज कुछ बाते मार्के की हुई।

रम:—क्या हैं वे बातें ?

शर्मा:— एक तो आज खुद बॅरिस्टर मधुसूदन की बीवी, शारद बेन ने आकर मॅजिस्ट्रेट के सामने अपने बयान दिये। उसने अपने ज़ाती तजर्बे से बतलाया कि भडारी और बॅरिस्टर दोनो के दोनो रघुनाथ और उसके साथियों के ख़िलाफ बडा भारी षडयत्र रच रहे है। उन्होंने कहा कि भडारी ने दस हज़ार रुपये पुलिस सुप्रिंटेडेंट को रिश्वत दिये है और असली मामले को छिपा रखा है। यानी भडारी ने मजूदरो मे दहशत भरने के लिये अपने खान के हाथ उनपर बदूको के वार करवाये, और इस सत्य बात को छिपाने के लिये उसको हिंदू-मुस्लिम दगे की शक्ल दे रखी है। ... लेकिन। दूसरी-और भी ताज्जुब की बात यह हुई, कि ज्योही शारदाबेन अपना बयान खतम करती है, त्योंही खुद भडारी का खान आता है, वही जिसने मजदूरो पर गोलिया चलाई थी, और भडारी का और वकील का सारा का सारा पर्दाफाश कर देता है। मुझे तो खुद अपनी ऑखो पर विश्वास नहीं होता था। मालूम होता था कि कहीं नाटक या सिनेमा तो नहीं देख रहा हूं।

रम—खान ! वह खान, तो कहते है, यहां आया था कुछ देर पहले, खैर लेकिन यह बताओ कि तुम बाद मे अपने वकील से मिले ?

शर्मा—हां, हां!

रम:—क्या कहा उन्होंने?

शर्मा—उन्होंने कहा कि अब अपना मामला बहुत मजबूत है। उन्होंने फौरन् शारदाबेन और खान के पुरावे की रोशनी में केस का जल्द से जल्द फैसला करने के लिये अर्जी की है। मैं जब आया तो वह मॅजिस्ट्रेट की अदालत में अपनी अर्जी पेश करने जा रहे थे।

रम:—ठीक है। अब मुझे खुद चल कर देखना चाहिये कि मामला कहां तक आ पहुंचा है। शर्मा, देखना, बाई के लिये मैं ये फल लाया हूं, उन्हें रख लो।

(थैली देता है। शर्मा उसमें से फल निकाल कर तख्त पर रखता है। रमजानी कपड़ों का बंडल ले कर चला जाता है। उसके चले जाने के बाद शर्मा कुर्सियों को ठीकठाक रखता है। और तख्त को साफ करता है। चन्द्रभागा अंदरसे आती है। अब उसने अपने बालों को तेल डाल गूंथ लिया है, ललाट पर कुंकुम की बिंदी भी लगा ली है। अपनी साड़ी को भी ठीक-ठाक कर लिया है। इन सब बातों की वजह, उसके नूर में काफी फर्क हो गया है।)

चंद्र—यह फल कौन लाया?

शर्मा—रमजानी। आप को दवा लेना है न!

चंद्र—अब मुझे दवा की जरूरत नहीं है।

शर्मा—क्यों?

चंद्र—अरे बाबा, बीमारी हो तो दवा लेना, कि वैसे ही।

शर्मा—मगर आप बीमार तो हैं न।

चंद्र—हां, मैं बीमार थी, मगर अब नहीं हूं।

जाती है।)

रम:—शर्मा, तुम कोर्ट मे गये थे कि नहीं ?

शर्मा:—वहीं से तो आया हू मै।

रम.—कहां तक आया मामला ?

शर्मा:—मामला तो चल रहा है। लेकिन आज कुछ बाते बडी मार्के की हुई।

रम:—क्या हैं वे बाते ?

शर्मा:—एक तो आज खुद बॅरिस्टर मधुसूदन की बीबी, शारदा बेन ने आकर मॅजिस्ट्रेट के सामने अपने बयान दिये। उसने अपने जाती तजर्बे से बतलाया कि भडारी और बॅरिस्टर दोनो के दोनो रघुनाथ और उसके साथियों के खिलाफ बडा भारी षडयत्र रच रहे है। उन्होंने कहा कि भडारी ने दस हजार रुपये पुलिस सुप्रिटेडेट को रिश्वत दिये है और असली मामले को छिपा रखा है। यानी भडारी ने मजदूरो मे दहशत भरने के लिये अपने खान के हाथ उनपर बदूको के वार करवाये, और इस सत्य बात को छिपाने के लिये उसको हिंदू-मुस्लिम दगे की शक्ल दे रखी है। ··· लेकिन। दूसरी-ओर भी ताज्जुब की बात यह हुई, कि ज्योही शारदाबेन अपना बयान खतम करती है, त्योंही खुद भडारी का खान आता है, वही जिसने मजदूरो पर गोलिया चलाई थी. और भडारी का और वकील का सारा का सारा ... कर देता है। मुझे तो खुद अपनी ऑखो पर विश्वास नहीं था। मालूम होता था कि कहीं नाटक या सिनेमा तो नहीं देख हू।

रम—खान ! वह खान, तो कहते है, यहा आया था कुछ देर पहले, लेकिन यह बताओ कि तुम बाद मे अपने वकील से मिले ?

शर्मा—हां, हां।

रमः—क्या कहा उन्होंने ?

शर्मा—उन्होने कहा कि अब अपना मामला बहुत मजबूत है। उन्होने फौरन् शारदाबेन और खान के पुरावे की रोशनी में केस का जल्द से जल्द फैसला करने के लिये अर्जी की है। मै जब आया तो वह मॅजिस्ट्रेट की अदालत में अपनी अर्जी पेश करने जा रहे थे।

रमः—ठीक है। अब मुझे खुद चल कर देखना चाहिये कि मामला कहा तक आ पहुंचा है। शर्मा, देखना, बाई के लिये मै ये फल लाया हू, उन्हे रख लो।

(थैली देता है। शर्मा उसमे के फल निकाल कर तख्त पर रखता है। रमजानी कपडों का बंडल ले कर चला जाता है। उसके चले जाने के बाद शर्मा कुर्सियो को ठीकठाक रखता है। और तख्त को साफ करता है। चंद्रभागा अंदरसे आती है। अब उसने अपने बालो को तेल डाल गूथ लिया है, ललाट पर कुंकुम की बिंदी भी लगा ली है। अपनी साडी को भी ठीक-ठाक कर लिया है। इन सब बातों की वजह, उसके नूर मे काफी फर्क हो गया है।)

चंद्र—यह फल कौन लाया ?

शर्मा— रमजानी। आप को दवा लेना है नी!

चंद्र—अब मेरे कू दवा की जरूरत नहीं है।

शर्मा—क्यो ?

चंद्रः—अरे बाबा, बीमारी हो तो दवा लेना, कि वैसे ही।

शर्माः—मगर आप बीमार ही तो है न।

चंद्रः—हा, मैं बीमार थी, मगर अब नहीं हू।

शर्मा.—अब नहीं है ? इतने मे बीमारी ठीक हो गई ?

चंद्रः—हा। हमारी बीमारी का इलाज रमजानी भाई ने कायम का कर दिया। उसने हमकू खूब अच्छा डोज़ पिलाया है। अब हमकू कुछ नहीं हो सकता। तुम हमारी कोई फिकीर मत करो। अब जाओ, तुम अपना काम करो।

(शारदा बेन आती है।)

शर्मा.—अहा, शारदा बेन, यहा आ गई ?

शारदाः--हा, जरा चद्रभागा से मिलना था।

शर्माः—ठीक है। मिलिये। मै अभी आता हू। (जाता है।)

(शारदा कुछ देर कमरे का निरीक्षण करती है। वह महात्मा गाधी के चित्र को गौर से देखती है।)

शारदा.—यह बापू का फोटो तुम्हारे यहा किसलिये ?

चंद्रः—क्यो ? बापू क्या बस अकेले आपके ही हैं ? हमारे नही ?

शारदाः—मेरा मतलब यह नहीं है। रघुनाथ मजदूर-सभा मे है न।

चंद्रः—तो ! क्या हुआ ?

शारदा—उसको क्या करना बापूसे ? उनके सत्य और अहिंसा से ?

चंद्रः--शारदा बेन, आप बहुत गफलत में हैं। आपके यहा बापू का खाली फोटो ही टॅगा है। लेकिन मुझे अच्छी तरह मालूम है कि उस फोटो के सामने आपके यहा के लोग सत्य और अहिंसा का बराबर गला घोंटते हैं। उसका खून करते हैं। अगर फोटो की जगह बापू होते, तो तुम लोगों की कार्रवाई देखकर पागल हो

जाते। खादी पहन कर और बापू का नाम ले कर [illegible]
अन्याय और अत्याचार करते हों कि बेचारे बापू [illegible]
आँख फोड देते। लेकिन हमारे यहां हमने उनका [illegible]
ही नहीं लगा रखा है बहन ! हम तो समझते हैं कि [illegible]
घर में खुद बापू बैठे हैं और वह हमको देखते हैं। इस [illegible]
यहां हम कोई ऐसी बात नहीं होने देते, जो हमारे बापू को [illegible]
भर भी बुरी लगे। हमारे यहां के लोग बापू की [illegible]
का, उनके देशप्रेम का, उनके दरिद्रनारायण की [illegible]
रखते हैं।

शारदा—तुम्हारा कहना सच है, बहन। आओ बैठो, बहन।
तुमको देख कर मुझे बड़ा अच्छा लगता है।

(दोनों तख्त पर बैठ जाती हैं।)

शारदा—(चंद्रभागा का हाथ अपने हाथ में ले कर) बहन,
मैंने सुना कि तुम बहुत बीमार हो।

चंद्र:—मेरे चेहरे से आपको क्या मालूम पड़ता है ?

शारदा:—चेहरे से तो तुम भली-चंगी मालूम पड़ती हो।

चंद्र.—बस तो फिर। लेकिन तुम अपना तो बताओ। आज
नौ दिन से तुमने खाना क्यों नहीं खाया ?

शारदा—(चौंक कर) किसने कहा तुम्हें ?

चंद्र:—किसी ने कहा। लेकिन सच है ना ? बोलो, वह बापू
बैठे हैं ऊपर।

शारदा:—(हँस कर) चंद्रभागा, तुम बहुत खराब हो।

चंद्र:—देखो, बात को बदलाना नहीं। हमारे यहां खाना खाओगी ?

शारदा:—नहीं, नहीं। अभी नहीं। देखो बहन, (अपनी मनी

बॅग में से सौ रुपये का नोट निकाल कर) यह देखो। मुझे वाकई बड़ी शरम लगती है कि मैं इसके पहले तुम्हारे यहा क्यों नहीं आई !

चंद्र:—यह किसलिये है ?

शारदा:—तुम्हारे लिये।

चंद्र:—लेकिन मुझे इससे क्या करना ?

शारदा:—अरे, रघुनाथ हवालात में बद है, तो तुमको ख़र्चे की तगी नहीं ?

चंद्र:— मेरे कूं जरा भर भी तंगी नहीं है यहा। यहा हमारे मजूर लोग मेरी ऐसी वर्दाश्त रखते है कि महारानी की भी कोई नहीं रखता होगा। यहा रोज मेरे कू देखने कू डॉक्टर आता है, वह अच्छी से अच्छी दवा देता है। मेरे लिये ये लोग कहा कहा से अच्छे से अच्छे फल ला के देते है। वह देखो। हमारे पास दिन और रात आदमी रहता है। उसको चाहे जो काम बताओ, फ़ौरन् करता है। · मेरे यहा हर रोज हजारो लोग आते है और पूछते हैं, कैसी हो ? क्या हो ? ··· ···· अरे मेरे कू इनका प्रेम देख कर ऑख में पानी आ जाता है। मालूम पडता है कि ये गरीब लोग अपने कूं कितना प्यार करते है। ·· नहीं तो वही जब पिछले साल हमारे यहा से जेल में गये, तो कोई कुत्ता भी आकर हमकू नहीं पूछता था।·· · एक बार तो अमकू ऐसा हुआ कि अम मरते मरते बचे। लेकिन किसी ने पूछा तक नहीं कि बाई तुमकू क्या होता है ? ·· यहा यह बात नहीं है। मालूम पडता है कि हम आदमी की दुनिया में रहता है; उन आदमी लोग का और हमारा सुख-दुख एक हो जाता है। और जब इतना सब आदमी हमारे लिये रातदिन काम करता है, हडताल करता है, तो हमकू अपना दुख तो मालूम तक नहीं पडता।

शारदाः—तुम बड़ी भाग्यवान् हो, चंद्रभागा। हम ही अभागी है।

चंद्रः— क्यो, क्यो ? तुम्हारे यहा सभी कुछ तो है। खाने-पीने को, पहनने ओढने को। घर-बार सब तो अच्छा है।

शारदाः—अरे जहा दिल नहीं है, वहा ये सब बाते बेकार है। सब ढोंग धतूरे है। इनसे आदमी को कोई फायदा नहीं। बल्कि मुझे तो यह मालूम पड रहा है कि अगर ये सब नहीं होते तो हम लोग ज्यादह सुखी होते। आ, हो. हो. हो ! पैसा आदमी को एकदम पत्थर बना देता है।

चंद्र—क्यों, क्यो !

शारदाः—क्या बतावे बहन ? तुम तो सब जानती हो। मै घर मे क्या रहती हूं, ऐसा मालूम होता है कि कहीं नरक मे आकर तो नहीं गिर पडी हू। खादी पहन कर और सत्य और अहिंसा का नाम ले लेकर ये लोग बापू के मुंह को कालिख पोत रहे है। छि, छिः ! आज मैं यहा आई हू। लेकिन इस घर मे मुझे बहुत ही भला लग रहा है। रघुनाथ और तुम जिस घर में रहते हो, वह बेशक अच्छा होना चाहिये। तुम लोग अपने गरीब देशवासियो की प्राणपण से सेवा करते हो। उनको दिलसे प्यार करते हो और उसके बदले मे आज हजारों मजदूर तुमको जी-जानसे प्यार करते है। सचमुच तुम्हारा घर यानी प्रेम और सद्भाव का जिंदा फव्वारा है। तुम्हारे ही यहा बापू के दरिद्रनारायण की असलियत मे पूजा होती है।

(इतने मे बाहर दूर से नजदीक आते हुए ये नारे सुनाई देते है ' "इन्कलाब जिंदाबाद ! कामरेड रघुनाथ ज़िंदाबाद ! मजदूर सभा

जिंदाबाद। दुनिया के मिहनतकश एक हो।— नारो को सुनते
चंद्रभागा और शारदा तख्त पर से उठ कर आश्चर्यचकित मुद्रा
इधर-उधर देखती है। बाहर कई आदमियो के पैरो की आहट
सुनाई पडती है। शीघ्र ही कॉमरेड रघुनाथ और उसके पीछे रमजानी,
शर्मा और खान आते है। चद्रभागा रघुनाथ को देख कर अदर
चली जाती है।)

रघु -- ओ हो, शारदा बेन। अरे तुम यहा कहा ? ऐ !

शारदा --रघुनाथ, तुम छूट गये ? कब ?

रघु --यह देखिये, अभी चला ही तो आ रहा हू। आप खडी
क्यो है ? बैठिये न।

शारदा --तुम्हे इस हाथ मे गोली लगी। क्या जख्म ज्यादह है ?

रघु --मैने तो जख्म की ओर देखा तक नहीं। जब से पट्टी
बाधी है, तब से अभी उसे खोला कहा ?

शारदा --अरे। तो कोई जाओ। वह हमारे डॉक्टर सतीश
बाबू को जानते हो न उन्हे फौरन बुला लाओ।

रघु — अरे आप नाहक तकलीफ कर रही है। अब तो मै आ
ही गया हू। अब यही काम तो करना है। आप खडी क्यों है। लीजिये
बैठिये। (कुर्सी उठा कर देता है।) आओ भाई, रमजानी। खान
भाई।

शारदा --मै जरा चद्रभागा से मिल हू अदर।

(अंदर जाती है।)

शर्मा -- आज इस खान भाई ने कमाल किया। क्यों ? खान ?
कोर्ट मे ऐसे बोले जैसे तुम्हे खुदा पाक का इलहाम हुआ
तो देखता ही रह गया।

रम:--लेकिन खान तुमने जो यह सब किया, उससे तुम्हारे मालिक वह सेठजी और भंडारी साहब तो ज़रूर नाखुश होंगे।

खान:--अम मुसलमान है, जो अपने दीनो-ईमान पर कायम रहता है. जो हमेशा नेकचलन और नेकनीयत होता है, नेक राह पर चलता है। जो हैवान बदनीयत है और बुरी राह पर चलता है; वह काफिर है। वह शैतान का बच्चा है। उससे दूर रहो।.... अम देखता है कि इन पैसेवालोंने अमको एकदम गुमराह कर दिया है। इसलिये वह हमारा हरगिज मालिक नहीं है. सबका मालिक बस वह एक अल्लाह है। आदमी-आदमी का मालिक क़तई नहीं हो सकता।

रम:--क्या लाख अशर्फी की बात कही है, खान, तुमने इस वक्त।

रघुनाथ:--(खान का हाथ पकड कर) शाबास खान! आज हम मान गये तुम्हे? तुमने जरूर हमारे कामरेडो का खून किया है, अपने इस हाथ से। लेकिन अब अगर तुम और भी दस खून कर डालोगे. तो भी हम बराबर तुम्हारे हाथ को चूमते ही जायेगे। आओ आज हम तुम गले मिल ले। (दोनो प्रेम से गले मिलते है और यथा-स्थान बैठ जाते है।)

रघु:--शर्मा, देखो, वर्किंग कमीटी के सब मेंबरो को जा कर खबर करो कि आज रात को नौ बजे वे इकट्ठे हो जायॅ।

रम:--आज नौ बजे, रघुनाथ?

रघु:--हां।

रम.--आज के दिन रहने दो।

रघु:--क्यों?

रम:--आज ऐसा कि तुम अभी छूट कर आये हो तो ज़रा

आराम करो। अपन फिर कल ले लेगे मीटिंग।

रघुः—कल क्यों ले लेगे मीटिंग? क्या मेरे आराम के लिये? अभी तक हम हवालात मे रह कर कौनसा बडा भारी काम कर रहे थे, जो हमको आराम करना पडे। बल्कि हमको काम नहीं था, इसलिये ज्यादह तकलीफ होती थी। हमें तो काम ही आराम देता है। हमे काम जल्द से जल्द शुरू कर ही देना होगा।

शर्माः—काम तो हमे करना है। लेकिन एक दिन से क्या होता है।

रघु.—तुम पूंछते हो, एक दिन से क्या होता है? एक दिन से यह होता है कि यह सारी पृथ्वी अपने आसपास एक चक्कर घूम लेती है, समझे। तुम मजदूर सभा के कार्यकर्ता हो और किसान सभा के सक्रेटरी हो। लेकिन तुम अभी काम की अहमियत नहीं समझते। तुम नहीं जानते कि एक दिन की क्या, एक मिनट की गफलत से हम अपना सर्वनाश कर लेगे। हमारे दुश्मन, वह सरमायादार रात को दिन बना कर हमे फॉदने की फिराकमे बैठे है, हम पर घात लगाये बैठे है। वे तो बस चील की तरह हमारी कमजोरियोका फायदा ले कर हमं पर झपटनेका मौका ढूट रहे है। इसलिये हमें उनको कोई मौका देने के पेश्तर ही अपने सगठन को मजबूत बनाने की हरचद कोशिश करनी होगी। मजदूरो का संगठन यही हमारी एक मात्र ताकत है। इसीलिये मीटिंग आज ही लेनी होगी।

रमः—मै यह सोच रहा था कि कल हम लोग तुम्हारा जुलूस निकालते और फिर अपना काम शुरू करते।

रघु.—मेरा जुलूस निकालना कोई इतना जरूरी काम नहीं है। आज हजारों मजदूर, आदमी और औरत, अपनी ओर आँख लगाकर

बैठे हुए है। हम पर उनका विश्वास है। हम पर उनका सारा दारोमदार है। और इधर हम ऐयाशी और गफलत मे बैठे रहे तो इस से ज्यादह विश्वासघात और क्या होगा ? मज़दूर तो बेचारे मारे मेहँगाई के तडफते रहें, और हम देखो तो अपने जुलूस निकालने की फिराक़ में हैं ! यह हम को शोभा नहीं देता। जाओ, सब लोगों को तुम दोनों जाकर फौरन ख़बर करो कि मीटिंग आज ही लेनी है।

रम: —ठीक है। चलो शर्मा। खान, तुम यहीं बैठोगे ?

खान:—नहीं. अब अम जायगा। तुम से फिर मिलेगा।

(तीनो जाते है।)

रघु:—अरे, चद्रभागा !

(चद्रभागा आती है और उसके पीछे लगी शारदा भी।)

चंद्र:—क्या !

रघु:—अरे जरा मुझे कुछ पहनने को तो दो।

चंद्र.—पहनने को ? पहनने के लिये तो कुछ नहीं है। वह तुम्हारे कपडे तो रमजानी ले गया दरजीके यहाँ।

रघु —अच्छा, कुडता नहीं तो कोट तो होगा न।

चंद्र:—वह भी नहीं है।

रघु —देखा शारदा बेन, औरत आदमी को कैसा नगा कर देती है। ऐं ? अच्छा कोई बात नहीं।

शारदा:—ताली दोनों हाथसे बजती है, रघुनाथ। तुम जब देखो, तब ही उठे कि झट जेलमें चले जाते हो। तुम्हारे बाद बेचारी औरत की जान को क्या होता है ? उसकी खबर कौन लेगा ?

रघु:—आप ! आपको भी तो कुछ न कुछ काम चाहिये कि नहीं ! घरमें खाली ही तो बैठी रहती हैं न आप। इसीलिये हमारे

यहांकी देखरेख का काम हमने आपके सुपुर्द कर दिया। क्यों है न ?

शारदाः—चंद्रभागा है, इसलिये तुम्हारी देशभक्ति चलती है। बिचारीको देखो न, क्या आफतें झेल रही है-सिर्फ तुम्हारे लिये। सचमुच, चंद्रभागा है इसीलिये तुम यह सब कर सकते हो। कोई दूसरी औरत होती तो तुमको नाको चने बिनवाती।

रघु.—शारदा बेन। चंद्रभागा है, इसलिये मै हूं। और मैं हूं इसलिये चंद्रभागा है। क्यो है न, चंद्रभागा ?

(चंद्रभागा अंदर चली जाती है।)

रघुः—चंद्रभागा. भाग गई। अरे, अब खाने पीने को भी दोगी कि नहीं, भूख लगी है।

शारदाः—वही तो कर रही है। उसको तुम्हारी सबसे ज्यादह फिक्र है।

रघुः—हां।

शारदाः—(कुछ सोच कर) रघुनाथ, तुम्हे जरा एक बात पूछनी है।

रघुः—क्या ?

शारदाः—(हलके स्वरमे) तुम यहां से कहीं और जगह नहीं जा सकते ?

रघु.—क्यो ? कहां जायँ ?

शारदा.—कहीं दूसरी जगह।

रघु.—लेकिन क्यो ?

शारदाः—क्यों ! (कुछ सोच कर) मुझे क्या मालूम। लेकीन मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि तुम दूसरी जगह चले जाते तो अच्छा होता।

रघु.--यहाँसे छोड़कर कैसे जायँ शारदा बेन ?

शारदा--क्यो, तुम पैसो की मत परवाह करो। उसको मैं सब देख लूँगी। लेकिन तुम इस जगह को छोड़ो।

रघु--पैसो की कोई बात नहीं है, शारदा बेन। मेरा मतलब है कि इस जगह का छोडना यानी हमें अपने आपको खो देना है। यहा हम इतने दिन रहे। यहा रात दिन काम किया। यहां खपे। और अब ऐन वक्त यहा से चले जाना यानी ऐसा कि पेड को जड़से उखाडने जैसा है।

शारदा--हा, बात तो ठीक है। तुम्हारे जाने से तुम्हारा काम तो ठप होगा जरूर। लेकिन यहाँ रहने में तुम्हें धोखा है रघुनाथ। इसलिये कह रही हू।

रघुः--मुझको काहे का धोखा।

शारदा--तो तुम्हे बात साफ साफ़ बतलाना ही होगी। देखो रघुनाथ, तुम्हारे खिलाफ़ भडारी और .. .... हमारे यहां से भी ...

रघु--यानी आप का मतलब है वकील साहब से।

शारदा--हा। तो ये दोनों तुम्हारे खिलाफ तुम्हें फाँदने के लिये जबर्दस्त षडयंत्र रच रहे है।

रघु--मै जानता हू। भडारी कोई मामूली आदमी नहीं है। बडी औंधी खोपडी का आदमी है वह।

शारदा--बड़ा खतरनाक और ठडा पापी है। उसने वकील साहब को भी ऐसा बना रखा है कि वह रात दिन उसी की बनी फेरते रहते है।

रघु--यह ऐसा तो होना ही है, शारदा बेन, हमेशा। ये

जितने भर भी वकील और मजिस्ट्रेट है, कोर्ट और कचहरी है, पुलिस और फौज है, इस वक्त तमाम पैसेवालो के हाथ के खिलौने है। वे जैसा नचावेगे, वैसा ये नाचते है।

शारदा:—ठीक यही बात हो रही है। इसीलिये मै कह रही हू कि तुम्हे यहा से कही और चले जाना चाहिये।

रघु.—नही, मै कहता हू कि इसलिये हमे यही रहना चाहिये; नहीं समझीं आप? हिंदोस्तान मे आप ही बताइये वकील और पुलिस, मजिस्ट्रेट और अदालत कहा नही है?

शारदा:—ये तो हर जगह है।

रघु:—तो फिर जहा भी ये होगे वहा हम मिहनतकशो को कौन चैन लेने देगा? इसीलिये हर मिहनतकश को अपनी जगह पर ही अपना संगठन मजबूत बनाना होगा। उसको जिंदा रहने का यही एकमात्र साधन है।

शारदा:—देखो, भाई! क्या बतायॅ। अच्छा, मैंने तो बात कह दी। अब तुम सोचो।

(इतने मे बाहर बूटो की खटखट सुनाई देती है। बाहर से आवाज आती है। रघुनाथ।

रघु:—कौन है।

बाहर आओ।

(रघुनाथ बाहर जाता है। शारदा बाहर झॉक कर देखती है। और फिर अंदर से चद्रभागा को बुला कर लाती है। कुछ देर मे रघुनाथ आता है।)

शारदा:—क्यों क्या बात है?

रघु:—मुझे गिरफ्तार करनेके लिये पुलिसका जवान आया है।

शारदा:—अरे भाई तुम तो अभी छूट कर आये। इतने ही मे फिरसे—

रघु:—यह मेरे नामका वारट है। पढिये।

शारदा:—(पढती है।) लेकिन तुम तो अभी छूट कर आये हो न?

रघु —तो क्या हुआ? जो छूटकर आया, वह फिर नही पकड़ा जा सकता?

शारदा —लेकिन इतनी देरमे तुमने ऐसा किया क्या?

रघु.—मैने यही सवाल कान्स्टेबुलसे पूछा। उसने कहा कि भंडारी और वकील साहबने कोतवालीमेसे यह वारट मेरे नामसे अभी कटवा कर उसके हाथमे दिया है।

शारदा.—किसने? वकील साहब ने!

(परदे मे से) रघुनाथ. जल्दी चलो देर हो रही है।

रघु.—चलो: अच्छा! चद्रभाग मै अभी जाकर आता हू अँ? (जाता है।)

(शारदा कुछ देर वज्राहत-सी खडी रहती है। जब चद्रभागा उसके पास आती है. तब वह "हाय, यह क्या किया तुमने, कह कर मूर्छित होती है। चद्रभागा उसे सम्हालती है)

चंद्र —शारदा बेन. घबराओ मत। देखो मै हू न।

शारदा —चद्रभागा तुम हो।

चंद्र —हा वहन।

शारदा —वहन! हां. अब वहन है हम। हमें अब साथ ही रहना है। इन डाकुओ के डेरों को आग लगाने के लिये। अब हमे भी आगे बढना होगा। चलो, चलें!

परदा

वकील साहब

अंक तीसरा

(स्थान—पहले अक जैसा। परदा खुलने पर खंजरी पर नीचे का गाना गाता हुआ भोला प्रवेश करता है।)

देशभक्तो का शुरू हगाम है
उनके घर में इधर चौपट काम है

× × ×

जब तलक साहब को बाहर काम था
तब तलक बीबी का घर में नाम था
अब चली बीबी वतन के काम पर
चाबिया नौकर के हाथों थाम कर
नौकरो को मिल गया सुख धाम है

× × ×

मखमली गद्दे बिछे हैं पलग पर
बैठते ही नाचते वे स्प्रिंग पर
जब कि मालिक बैठता उन पर नहीं
नींद ले हम, लेट उन पर क्यों नहीं ?
जी खपाने मे रखा क्या राम है ?

× × ×

घर मे घी है, शकर है औ' है रवा
क्यो हमेशा हम रहे खाते हवा
है रखे पिश्ते, मसाले किसलिये
प्रेम से हलुवा बना खानेलिये
साथ मे शरबत का ठडा जाम है

× × ×

स्वर्ग तो हमको यहा मिल है गया
एक काटा मगर उसमे रह गया
दिल की प्यारी गरचे होती बगल मे
क्या बताऊं ठाट बनता असलमे
खैर, रोने से न चलता काम है।

(गाना खतम होने पर भोला सोफे पर आराम से लेटता है। इतने में बाहर कोई दरवाजा खटखटाता है। भोला आवाज सुन कर ऐसा उछलता है, मानो उसको बिजली का झटका लगा हो। वह बाहर जा कर दरवाजा खोलता है। शारदा और चद्रभागा प्रवेश करती है।)

भोला:—क्या बाई, आपने सुन लिया ?

शारदा:—क्या सुन लिया ?

भोला:—मेरे चौपट कू सुन लिया ?

शारदा:—तेरी कौनसी चौपट है ?

भोला:—मेरी चौपट नहीं, बाई ! मै तो आपकी चौपट की बात कह रहा था।

शारदा:—तेरी अक्ल चौपट हो गई है। चल, कमरा जल्दी

साफ कर। देख. पहले वह बापूके फोटो पर की धूल साफ कर। उन सब कुर्सियो पर दूसरे साफ़ अस्तर चढा। उस तख्त पर अच्छी साफ चद्दर लाकर बिछा तो ! हा, जल्दी ! बाबूजी अभी आते ही होगे। (भोला जाता है।)

चंद्र — शारदा बेन, वकील साहब अब क्या कहेगे ?

शारदा—जो कहना होगा, वह कह लेगे।

चंद्र —तुम इतने दिन घर नहीं आई। और मेरे यहा रह कर तुमने उनके खिलाफ प्रचार किया. मजिस्ट्रेट और पुलिस मे तुमने उनके खिलाफ जबानी दी—यह तो अच्छा नहीं किया न ?

शारदा —तो क्या तुम यह कह सकती हो कि वकील साहब ने भडारी के पीछे लग कर रघुनाथ को गिरफ्तार करवाया यह बड़ी अच्छी बात की ? अच्छे-बुरे का ही तो अब फैसला होता है। अब बाबूजी भी आ गये है। देखे, अब उट किस करवट बैठता है।

(भोला बतलाये हुए कामो को चुपचाप करता जाता है। इस सिलसिले मे वह कोने में रखे हुअे आचार्य विद्यारत्न का सामान अदर ले जाना चाहता है। शारदा उसे रोकती है और अपने पिता की बैग मगवा कर उसे अपने पास रखवा लेती है। उनका बिस्तर अदर रखने को कहती है। शारदा बॅग खोल कर उसके अदर का सामान टटोलती है।)

चंद्र —अरे. आपके बाबूजी मार्क्स और लेनिन की पुस्तकें पढ़ते है।

शारदा —बाबूजी का नाम जानती हो क्या है ? आचार्य विद्यारत्न। उनका जैसा नाम है, वैसा ही उनका अधिकार है। वे बहुत बडे पडित है। सभी विषयों में उनकी जानकारी बहुत गहरी है। बापू

तक उनकी धाक को मानते हैं।

चंद्रः —ये किताबे शायद वे तुम्हारे ही लिये लाये है। देखो तुम्हारे लिये बाबूजी ने कैसा अच्छा लिखा है—'मेरी सत्यव्रता शारदा को।'

शारदाः—बाबूजी मुझे बहुत चाहते है। मेरी मा तो बहुत बचपन ही में गुजर गई। तभी से अकेले उन्होंने मुझको बडा किया, मुझे पढाया-लिखाया और सब कुछ किया। यह देखो यह सिगारदान चंदन का है और यह हाथी दाँत की कंघी मेरे ही लिये लाये हैं। यह साड़ी खास वे अपने हाथ के कते हुए सूत की तैयार करवा के लाये हैं। और यह देखो यह आगरे से मेरे लिये डिब्बा भर कर पेटे भी लेते आये हैं।

चंद्रः—आज आपके बाबूजी मेरे यहा आये तो मेरा ख्याल हुआ कि कोई होगा मामूली काग्रेस का आदमी। क्यो कि आते ही वे चौके मे घुस गये और अपने को खुद अपने हाथसे रोटिया सेक कर उन्होंने खिलाई।

शारदाः—बहुत सीधे है मेरे बाबूजी।

चंद्रः—लेकिन आपने जब कहा कि वे आचार्य है, तो मै एकदम थक्क हो गई। इतना बडा आदमी अपने साथ कैसा एकदम पानी की तरह घुल मिल जाता है। मालूम तक नहीं होता कि वह कोई दूसरा आदमी है।

शारदाः—अभी क्या देखा है, बहन! तुम अब देखना उनको। तुमको मै इसीलिये तो लाई हूं अपने साथ! वह देखो दोनो आ ही गये। चलो अपन तब तक अदर जा बैठें। भोला यह बेग रखना तो। (दोनों जाती है।)

(भोला सारी चीजें बैगपर रख कर उसे तख्त पर रख देता है। कुछ देर से वकील साहब और उसके पीछे आचार्य विद्यारत्न बातचीत करते हुए प्रवेश करते है।)

वकीलः—मैं और कुछ नहीं, इस सवाल का जवाब चाहता हूं कि शारदा बगैर पूछे घर से बाहर इतने दिन कैसे रही ?

विद्यारत्न—देखो वकील साहब, दिमाग को ठंडा रखो और फिर बात को सोचो। शारदा आपकी धर्मपत्नी है जरूर। लेकिन याद रखिये वह आपकी खरीदी हुई बाँदी नही है। किसी को भी इस घमंड मे हरगिज नहीं रहना चाहिये कि वह अपनी औरत भी पैसों के बल पर या अपनी डिग्रिया और शानशौकत के बलपर अपने वश मे बनाये रख सकता है। अपने सद्गुणो के अलावा दुनिया मे ऐसी कोई भी ताकत नहीं है: कि जो आदमी को आदमी के वश मे बनाये रख सकती है।

वकील —खैर, शारदा घर के बाहर रही यह बात भी इतने महत्व की नहीं है। लेकिन वह इन दिनो मेरे दुश्मनों से मिल कर मेरे खिलाफ प्रचार करती रही है, और मेरा नाम तमाम दुनिया मे बदनाम कर रही है। इसका क्या जवाब ?

विद्याः—इसका जवाब यही है कि जब किसी का नाम बदनाम होता है, तो उसकी जिम्मेदारी किसी दूसरे आदमी पर ढोलना परले दरजे की बेवकूफी है। अगर तुम यह समझते हो कि शारदा पागल हो कर ये सब बाते कर रही है, तो बेहतर है कि उसे हम किसी अच्छे डॉक्टर के सुपुर्द कर दे। ऐसी परिस्थिति में उसके बारे में हम लोगो को कुछ भी बातचीत करना बेकार है।

वकील —अर्जी गर्बूजी, वह पागल नहीं हैं। वह जानबूझ कर

मुझे सताने के लिये ये काम कर रही है।

विद्या--तब मुझे यही कहना होगा कि सबसे पहिले तुम्हे अपने मन की, अपने तरीको की, खुद फिर से जॉच करना चाहिये, क्यो कि आदमी अगर सत्य की राह पर हो तो वह दुश्मन को भी दोस्त बना लेता है। मगर चूंकि तुम्हारे दोस्त भी दिन ब दिन तुम्हारे दुश्मन बनते चले जा रहे है, इसलिये यह बहुत मुमकिन है कि तुम खुद ही सत्य का साथ तो नहीं छोड रहे हो ?

वकील:--आप के इस सत्य के भूत ने मुझे एकदम पागल बना रखा है। आप तो जब हो जभी सत्य ! सत्य ! ' चिल्लाते रहते है और वह आपकी पुत्री, शारदा, भी मेरा विरोध करते समय सत्य ही की दुहाई देती रहती है। आपका सत्य मुझको अजीब झमेला लगता है।

विद्या.--जो सत्य को अपने जीवन का साथी बनाना चाहता है, उसको वह अपने प्राणो से भी ज्यादह प्यारा लगेगा। लेकिन जो सत्य के नाम से अपने दुराचरण और दोषो को ढकना चाहता है उसके लिये सत्य जरूर झमेला ही है।

वकील--मालूम पडता है कि आप अब शारदा का पक्षपात करने लगे है।

विद्या--मुझे एक सवाल पूछना है तुम्हे वह यह कि तुमने जो यह कहा कि शारदा तुम्हारे दुश्मनो मे जा मिली है तो ये दुश्मन ऐसे है कौन ? क्या चद्रभागा तुम्हारी दुश्मन है।

वकील--चद्रभागाजी तो नहीं।

विद्या--तो क्या उसका पति, रघुनाथ, तुम्हारा दुश्मन है ?

वकील--हॉ, उसीने तो तमाम मामला खटा कर रखा है।

विद्या--उसने तुम्हारा क्या बिगाडा ?

वकील.—यही कि इक्का मील मे उसने हड़ताल की और उसका तमाम काम वद कर दिया, वह मजदूरो का सरपरस्त है और वे सब हमारे खिलाफ जबर्दस्त प्रचार कर रहे है।

विद्या:—रघुनाथ ने इक्कामील मे हडताल की। तो यह बताओ कि क्या वह मील तुम्हारा अपना है?

वकील.—मेरा तो नहीं, लेकिन इन अपने सेठजी का तो है।

विद्या—लेकिन उन सेठ का तुमसे क्या सवध?

वकील.—यह लीजिये. सबध क्यो नहीं? मै उनका वकील हू। असेम्ब्ली के चुनाव मे उन्होने मुझको जबर्दस्त मदद की थी।

विद्या—इतना ही कि कुछ और?

वकील.—और भी बहुत-सी बाते है। लेकिन ये भी क्या कम है?

विद्या—मै कहा कह रहा हू कि ये कम है? उलटे वे बहुत ही महत्वपूर्ण है। अब यह बताओ कि तुम उनके वकील हो, तो इससे तुम क्या समझते हो कि सेठजी तुम्हारे दोस्त बन गये? क्या तुम्हे यह पूरा पूरा विश्वास है कि वे तुम्हें हर समय अपना वकील बनाये ही रखेगे?

वकील—यह कौन कहता है!

विद्या—उसी तरह क्या तुम्हे इस बात का पूरा पूरा यकीन है कि इस साल सेठ साहबने तुमको M L A बनाया, तो वे हमेशा तुमको ही चुन कर अपनी कृपा का पात्र बनाते रहेंगे?

वकील.—यह भी कैसे हो सकता है।

विद्या.—अगर यह बात नै है, तो सेठजी को अपना दोस्त कहना तुमारे लिये कहा तक ठीक है। वे तो यह देख रहे है कि

उनको अपने मामले किसी वकील को देना है। तुम उनको अच्छे सस्ते मे मिल गये। बना लिया उन्होंने तुम्हे अपना वकील। लेकिन जहां उन्होंने देखा कि उनके मामले बिगड रहे है, फौरन् वे तुमको हटा कर अपना दूसरा वकील कर लेगे। .... .. उसी तरह सेठजी को काग्रेस का किन्ही कारणो से खैरख्वाह होना था। उन्होने देखा कि तुमको काग्रेस ने अपना उम्मीदवार चुना है। उन्होंने तुम्हे अपनी मदद दी, लेकिन कल काग्रेस तुम्हे नहीं चाहे और तुम स्वतत्र रूपसे चुनाव लडना चाहोगे तो क्या तुम समझते हो कि यह सेठ साहब तुम्हारा उसी तरह साथ देगे?

वकील —आपका मतलब क्या है।

विद्या—मेरा सीधा-सादा मतलब यही है कि सेठजी ने तुम्हे पैसा देकर अपना गुलाम बना रखा है। और यह बात न समझने के कारण तुम उन्हे अपना दोस्त कह रहे हो। लेकिन जो दोस्ती पैसो की बुनियाद पर की जाती है, वह पैसा देना बद करने पर काफ़ूर हो जाती है। यह बात सूरज की तरह एकदम साफ है बल्कि मै तो यहा तक कहने के लिये तैयार हू कि जो आज तुम्हारे दोस्त है, वे कल अपने पैसो की बदौलत तुम्हारे कट्टर दुश्मन भी हो सकते है।

वकील.—लेकिन सेठजी काग्रेस के मेम्बर भी तो है।

विद्या—तुम्हारा यह तो खयाल नहीं है, कि जो काग्रेस के मेम्बर हो गया वह निश्चित सत्यभक्त होता ही है। क्या काग्रेस मे स्वार्थियो का कम है? तुमने देखा नही कि यही सेठ आदोलन के दिनो मे सरकार मे जा मिले थे और उनके जबर्दस्त तरफदार थे। उन्होने अपना माल ~ दिन के लिये भी बद नहीं किया। और काला बाजार करके

जनता को लूटा और अनाप-शनाप मुनाफा कमाया। इन्हीं सेठजी ने जब देखा कि अब काग्रेस की गवर्मेंट आ गई है, तो झट पगडी बदल ली। जिधर हवा बहती है, उधर रुखख कर लिया। काग्रेस के मेंबर भी बने, काले बाजार के मुनाफे मे से थोडे से पैसे देकर चुनाव भी लडा, अपने उम्मीदवार भी खडे किये और अपना प्रभाव जमा लिया। क्या खयाल है आपका? ऐसे धूर्त सेठजी को आप अपना दोस्त कहते है, ऐं? और इसके उलटे आप रघुनाथ को जो अपना दुश्मन कहते हैं, वह किसलिये?

वकील —उसने हडताल की, बाबूजी।

विद्या —तो उससे हो क्या गया?

वकीलः—क्यों? हडताल से हिंसा नहीं हुई?

विद्या —हडताल से हिंसा हुई? कैसे?

वकील — हडताल से हिंसा होती है, यह खुद बापू का ही ना सिद्धान्त है।

विद्या.—ह, बापूने अभी तक कोई सिद्धान्त बनाया भी है? मुझे आज उनके पास रहते हुए बीस साल हो गये, लेकिन मुझे तो कभी ऐसा नहीं लगा कि बापूने कोई सिद्धान्त बनाया हो। बेचारे बापू शुरू से यही तो कहते आये है कि वे अभीतक सत्य के साथ प्रयोग कर रहे है। सत्य क्या है इसका खुद उनको तक पता नहीं। और इधर आप जैसे गाँधीभक्त जब कहते है कि बापूने किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, तब तो मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। या तो फिर यह कहना होगा कि गाधी-भक्त गाधीजी मे भी ज्यादह बढे चढे है। क्यो कि उनको ऐसे रत्न का लाभ हुआ है, जो खुद उस बेचारे महात्मा को जान खपाने पर भी प्राप्त नहीं

भत्ता मागा । शातिपूर्ण तरीके से मागा; हाथ मे लकडी का डंडा न लेते हुए मागा । नो बताओ । यह सत्याग्रह नहीं हुआ तो क्या हुआ ।

वकील —मैं यह नहीं चाहता कि सब लोग मील में से निकल जायें और मील का काम बद पडें ।

विद्या—काग्रेसने Quit India ये जो जनता को संदेश दिया था, वह मुझे बतलाओ तो क्या था ? " करो या मरो " का मतलब क्या है ? काग्रेस यही चाहती थी न कि ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सारी जनता बगावत करे । रेलको चलाने से रोके. तार को काटें, नौकरी से इस्तीफा दे—यह सब क्या है ! गवर्मेंट को काम करने देने से रोकना उसको एकदम Paralyse करना—यही तो है न ?

वकील —हा. आ !

विद्या —नो जिस तत्वपर तुम खुद काग्रेस मे अमल करते हो. उसी तत्त्व को जब दूसरा इस्तेमाल करता है, तो उसे गद्दार, बागी कहना कहा तक ठीक है । सोचो जरा इस बात पर ! ...... और इस रघुनाथ को तुम अपना दुश्मन कहते हो, ऐं ? अरे जरा ख्याल तो करो कि वह कितना सीधा सच्चा आदमी है । मै उसको अच्छी तरह पहचानता हूँ । इधर तुम उस भडारी के पीछे लगे रहते हो. यह देख कर नो मेरी अक्ल काम नहीं करती । बात कहना नहीं चाहिये. लेकिन अब चूँकि वैसा प्रसग ही आ गया है, इसलिये बताता हू । इन भडारी के खिलाफ हमारे प्रेसीडेंट के पास कुछ दिनो पेश्तर एक शिकायत आई थी । वह यह कि यह हजरत जो काग्रेसमेन आदोलन मे जेल गये थे. उन व्यक्तियों के घर की भोली-भाली औरतों को अपने पैसे के जोर से और खुद कामेसभक्त कह कर बरगलाता है और उनपर अत्याचार करता है । इस बात

की तफ्शील के लिये मुझे भेजा गया। और मैंने पाया कि न केवल यह भंडारी महाशय ही यह बदमाशी करते हैं; लेकिन उनके सेठजी भी इसमें शामिल है। भंडारी जी उनके इस काम में एजेंट है।

वकील:—सच? मुझे नहीं मालूम था कि यह आदमी इतना खतरनाक है। आपने उसके बारे में कोई स्टेटमेंट क्यों नहीं निकाला?

विद्या.—हां, वह बडा लम्बा किस्सा है। इस बात पर से ही तो मेरी और प्रेसीडेंट साहब की खूब ठनी। सेठजी बापू के पास गये। उन्होंने बडी आरजू मिन्नत की। बापू को दया आ गई। उन्होंने सेठजी को छोड दिया। तो कहने का मतलब यह है कि ये सेठजी और भंडारीजी आपके दोस्त है, एं?

(भंडारी प्रवेश करता है। वह बहुत गडबडी में आता है।)

भंडारी—वकील साहब!

विद्या—आइये भंडारीजी।

(विद्यारत्न को देख कर ऐसा हो जाता है जैसे उसमें काटो तो खून नहीं)

विद्या—कहिये, सब कुशल तो है।

भंडारी—आपकी कृपा है।

विद्या—कहिये, आज इधर कैसे पधारे?

भंडारी:—जरा वकील साहब से जरूरी मिलना था।

विद्या—लिजिये मिलिये!

भंडारी—वकील साहब, आप जरा पधारिये।

वकील—ठहरो। [illegible] मैं अभी आया।

वकील उठकर अन्दर जाते हैं। कुछ देर बाद वापस [illegible]

चद्रमागा आती है !)

शारदा·—देखा, चद्रभागा, वह भंडारी अपनी ओर कैसा ऑख फाड फाड कर देख रहा था।

चंद्र·—आख नहीं फाडेगा तो क्या करेगा ? तुमने और खान ने तो उसकी हवा बद कर दी। रमजानी भी गया है ठेठ गवर्नर के पास. तो देखो क्या करता है वह।

विद्या —(कोने में देख कर) शारदा, वह मेरी बॅग कहॉ है, यहॉ रखी थी वह।

शारदा·—उसको ले गया उडा कर चोर।

विद्याः—घर का ही चोर है न वह ! क्यों चंद्रभागा ? आओ बेटी बैठो। तो शारदा चोर ली न हमारी चीजें !

शारदा —आपने जब चीजे हमे दे दीं, तो उसमें चोरी कहॉ हुई ?

विद्या.—अभी दी कहा है ? देना है और तुमको यह जानना चाहिये कि जब चोर दूसरे के सामने चोरी करता है; तो जब तक उसको भी थोडा बाटा न दिया जाय. तब तक चोरी पचती नहीं है। क्यों. है न. चद्रभागा ? तुम भी थी शरीक चोरी मे ?

चंद्रः—चोरी करने में नहीं। लेकिन चोरी करवाने में जरूर शामिल थी।

विद्या —तब भी क्या हुआ। इसका मतलब इतना ही है कि अगर तुम्हें चोरी का आधा हिस्सा शारदा नहीं भी दे तो भी कमसकम थोडा हिस्सा जरूर देना होगा. है न ? तो बताओ चद्रभागा तुम क्या लेना चाहोगी ?

चंद्र—मै ? मेरे कू कुछ नहीं चाहिये ?

विद्याः—देखो, चद्रभागा, गाधी वावा जैसी वात मत करो। तुम तो कम्यूनिस्ट पार्टी की औरत हो। तुम्हें तो वरावर अपनी मागे जिधर से पूरी हों, उधर ध्यान रखना चाहिये। अच्छा, देखो शारदा, तुम दोनों चोरों मे झगडा न हो इसलिये हम ही चोरी के माल को वॉटने का फैसला दे देते हैं। शारदा, तुम्हारे लिये हम साडी रख देते है और चद्रभागा के लिये सिंगारदान और कघी, है न ?

शारदाः —और वावूजी पेठे ?

विद्याः—हा हॉ ! वे तुम मे से जो सव से ज्यादह सिरजोर होगा वह उडा लेगा; वस !

शारदा—अच्छा, वावूजी, आप मेरे लिये जो कितावे लाये है, उनमें से वहुत सी मार्क्स और लेनिन की है। तो क्या आजकल आप समाजवादी वन गये ? गाधीवाद आपने छोड दिया ?

विद्याः—शारदा, मै तो किसी वाद को नहीं मानता। मै तो वस अेक वात जानता हू और वह यह कि जो वात ऊँचाई की तरफ ले जाती है, वह अपनी है। वही सत्य है। मै गाधीजी को इसीलिये मानता हू कि वे सत्य पर प्रेम करनेवाले आज के वडे युगपुरुषो मे से एक हैं। किंतु उन्होंने सत्य की कोई monopoly तो नहीं ले रखी। सत्य को दूसरे देशो के महापुरुषों ने भी अपनी आजीवन तपस्या से ढूँढा है। मार्क्स और लेनिन ऐसे ही महापुरुष हो गये है। इसलिये उनकी वातों को भी प्रत्येक सत्यभक्त को आदर से समझ लेना जरूरी है।

शारदाः—वावूजी, मै तो यह समझती थी कि जो कुछ सत्य है, वह केवल गाधीवाद में ही भरा है। मेरे दिमाग में इस वजह से वहुत वेचैनी थी। लेकिन आज मुझे आपकी वातों से वडी तसल्ली मिली।

विद्या.—याद रखो. शारदा, किसी भी सत्यभक्त को किसी भी वाद का शिकार कतई नहीं बनना चाहिये। ससार को ऑखे खोल कर देखो और अपने स्वय के अनुभवो से सत्य की खोज करो। ससार के महापुरुष सत्य को खोजने मे तुम्हारे मार्गदर्शक जरूर हो सकते है। लेकिन प्रत्येक आदमी को सत्य का अनुभव प्रत्यक्ष अपने आप ही, अपनी तपस्या से करना पडता है।

चंद्र --हमारे यहा के लोग भी हमेशा यही बात कहा करते है।

विद्या --रघुनाथ बडा तपस्वी और सुलझी हुई तबियत का आदमी है। लाख लोगो मे वही अकेला चमकता हुआ सितारा है।

शारदा --बाबूजी. आप मेरे मन की बात कैसे एकदम ताड जाते है। मै भी कई दिनो से एकदम यही बात महसूस कर रही थी। एक बार तो चद्रभागा बहन से मैने यह बात कही भी थी। क्यों बहन, है न ?

विद्या --कैसा जादू करता हू, चद्रभागा मै. कि दूसरे के मन की बात एकदम समझ लेता हूँ। देखना मुझसे दूर रहना. हं ! कहीं तुम पर छूमतर कर दिया. तो फिर तुम भी न जाने क्या की क्या हो जाओगी।

चद्र --दुनिया मे आप जैसे जादूगारो की ही कमी है। आप तो हम सो ही बदलना चाहते है। मगर अभी तो बदलने के लिये सारी दुनिया पडी है।

विद्या --बडी समझदार हो चद्रभागा तुम ! शारदा. जरा एक बात तो बताओ कि तुमने इन तीन चार दिनो में क्या क्या काम किये ·

शारदा —काम तो कोई खास नहीं किया। लेकिन मैने रघुनाथ की गिरफ्तारी के खिलाफ खूब जोरो से प्रचार किया।

विद्या:–प्रचार में तुमने भंडारी को और गवर्मेंट को तो कोसाही होगा।

शारदा.—बेशक ! उनको आड़े हाथों लिये बिना कैसे काम चल सकता था ?

विद्या:—और वकील साहब को भी तो लपेटा होगा कि नहीं तुमने ?

(शारदा लज्जित होने का नाट्य करती है।)

विद्या:—क्यों, चंद्रभागा है न ?

चंद्र:—हां, वकील साहब की शारदा बेन ने बहुत ज्यादह बुराई की।

विद्या:—क्यों शारदा ?

चंद्र:—मैने शारदा बेन से कहा भी कि तुमकू इतना ज्यादह वकील साहब के खिलाफ नहीं बोलना चाहिये।

विद्या:—तो।

चंद्र:·—तो वह मेरे कूं उलटा बोलने लगी कि तुम कुछ नहीं समझती हो।

विद्या:—ठीक है। कोई बात नहीं। ऐसा होता ही है। आखिरकार शारदा भी तो इंसान है।

(इतने मे भंडारी भर्राया हुआ अंदर से बाहर आता है। उसके पीछे पीछे वकील भी आता है। शारदा और चंद्रभागा अंदर चली जाती है। भंडारी जब बाहर जाने को होता है, तब एकदम रुक कर और मुड़कर कहता है)

भंडारी:—वकील साहब, मै आप को फिर से पूछता हूँ आपने बात को अच्छी तरह सोच, समझ लिया ?

वकील·—हा, सब समझ लिया। आप अब तशरीफ ले जाइये।

भंडारीः—देखिये, इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।

वकील.—उसको, हम देख लेंगे।

भंडारीः —अच्छा, ठीक है। तो फिर आपको अब मज़ा चखना ही होगा। (जाता है।)

वकील'—बदमाश कहीं का। मुझको मज़ा चखाना चाहता है. ऐं!

विद्या —आख़िरकार बात क्या हुई, जो चंद मिन्टो मे आग बबूला हो गये।

वकील – गुस्सा तो ऐसा आता है कि इस दुष्ट को यहीं खतम कर दिया जाय।

विद्याः—अरे तो भाई बात क्या हुई!

वकील —मुझको कहता है, नीच, कि तुम शारदा को पागल खाने मे भिजवा दो और वहा से पागलपन का डाक्टरी सर्टिफिकेट मगवाओ।

विद्या —क्यो?

वकील —इसलिये कि शारदा ने अपने भाषणो मे भंडारी की बहुत पोल खोल दी और कोर्ट मे भी उसके ख़िलाफ़ ऐसी जबानी दी है जो शायद उसके लिये खतरनाक साबित हो?

विद्या —तुम्हारे भी तो खिलाफ बहुत कुछ कहा है शारदाने!

वकील —तो क्या हुआ? अपनी औरत को पागल का सार्टीफिकेट दिलवा कर मैं अपनी खुद की नाक कटवाऊंगा? हूं!

विद्या —और मान लो भंडारी की वजह से शारदा को कुछ खतरा हुआ तो।

वकीलः—देख लेंगे।

विद्या:—शायद उसे जेल मे भी जाना पड़े।

वकील:—हां यह हो सकता है। शारदा जेल में भिजवाई जा सकती है। आपको कैसे मालूम ?

विद्या:—क्या पूछ रहे हो ?

वकील:—यही कि शारदा को जेल मे जाना है।

विद्या:—क्यो इसमे तुम्हारा भी हाथ है न ?

वकील:—मेरा हाथ था। मगर ...अब क्या करे ? उसकी गिरफ्तारी का वारंट कट चुका है।

विद्या:—अगर तुम उसको गिरफ्तार करवाना चाहते हो, तो फिर कोई बात ही नहीं।

वकील:—नही, मुझसे बडी भूल हुई।

(शर्मा हाफता हुआ आता है।)

शर्मा:—बाई! बाई कहा है ?

विद्या:—कौन शारदा ?

शर्मा:—नहीं हमारी बाई ?

विद्या—कौन चद्रभागा ? अदर है। अरे चद्रभागा, इधर आओ।

(चंद्रभागा आती है।)

शर्मा:—अच्छा हुआ बाई, आप यहा आ गइ। वह अपना खान तो फिर से गद्दार हो गया।

चंद्र:—क्यो ?

शर्मा:—अरे वह अभी अपने मुहल्ले में आया था। मजदूरो से कह रहा था कि तुम काम पर चलो। मजदूर क्यो मानने लगे उसकी बात। तो उसने उनको वहीं पीटना शुरू किया।

विद्या:—कितने लोगों को चोट आई ?

शर्मा —कईयो को काफी चोट आई ? उसके बाद वह पठ्ठा आपके घर पर आया।

चंद्र —क्यों ?

शर्मा.—न जाने क्यो ?

वकील.— इस भडारी की दुष्टता की भी हद हो गई। अच्छा हुआ कि आप दोनों यहा चली आई. वर्ना उस खान को किस इरादे से भेजा था उस नीच ने किसे मालूम ?

चंद्र.—अच्छा हुआ. बाबा।

शर्मा —अरे बाई। आप ऐसी क्यो घबरा रही हैं। आप को अगर वह जरा भी तकलीफ देता तो फिर आप देखतीं कि क्या तमाशा दिखाई देता। आज खून की होली खेलते मील के तमाम मजदूर। आप मजदूरो को कम मत समझियेगा।

विद्या —देखा. वकील साहब. आपने। वह पैसेवाले क्या क्या कर सकते है जानते हो कौन है यह भडारी ? कांग्रेस का मेंबर है।

वकील —कांग्रेस का मेंबर है कि शैतान का बच्चा।

विद्या —देखो इन सत्य और अहिंसा के भक्तो की कार्रवाई ? यही है न तुम्हारे दोस्त ?

वकील —बेशक। ये पैसेवाले बडे भयानक होते है। रावण भी इनके सामने कुछ नहीं।

शर्मा —मार्क्स और लेनिन शुरू से यही तो कहते आये है कि खत्म इन पूंजीपतियो को खत्म करो। इकलाब जिंदाबाद।

वकील —कांग्रेस के नाम पर यह काली करतूत !

शर्मा —कांग्रेस की ही बदौलत तो ये सब पूजीपति, जमींदार और जागीरदार और बडे बडे काले बाजार के नफाखोर जिंदा हैं। अगर

यहां किसान मजदूरों की हुकूमत होती, तो ऐसे लोगों को, जो जनता के दुश्मन हैं, सबसे पहले फॉसी पर लटका दिया जाता। बगाल मे पैंतीस लाख लोगों को इन पूजीपतियोंने अन्न को दाव कर मार दिया, और वहां की ग़रीब औरतों की अस्मत को पैरों तले कुचल दिया। गरीव जनता के खून को चूस चूस कर ये पूजीपति फूलकर कुप्पे हो रहे है। इन नर राक्षसों को पहले खत्म करना ही होगा। वर्ना जनता को राहत नहीं मिल सकती।

विद्याः—तुम्हारी बात एकदम झूठ नहीं है।

शर्माः—मेरी बातको कौन झूठ कह सकता है? आज तमाम दुनिया मे मेरी इस बात पर लाखों और करोडों लोग अमल कर रहे है। रूस में हमारा राज है। और जल्द ही सारी दुनिया मे इन पूँजीपतियों और सरमायादारो की हुकूमतों को जड से उखाड कर हम अपना राज कायम करनेवाले है। देखना थोडे ही दिनो में जमीन के भीतर से एक जबर्दस्त ज्वालामुखी फूट कर इन मुनाफाखोरो और कालेबाजारवालो को जलाकर भस्म कर देगी। वकील साहब, मै आपको भी यही चेतावनी देना चाहता हूँ कि आप वक्त आने के पहले चेत जायॅ। वर्ना इन पूजीपतियों के साथ रह कर कहीं आप को भी बरबाद न होना पडे।

(घटी बजती है। भोला घबराया हुआ आता है।)

वकीलः—कौन है रे?

भोलाः—पुलिसवाले आये है आपसे मिलने कू।

विद्याः—जाओ, देखो तो क्या बात है (वकील जाता है।) मालूम होता है शारदा की गिरफ्तारी के लिये आये है ये यमदूत! शारदा! इधर आओ! (शारदा आती है।)

विद्या'—शारदा. देखो बेटी घबराना मत हं। मै तुम्हारे साथ हू और रहूगा ! ह ।

शारदा.— -क्या बात है. बाबूजी ?

विद्याः—देखो, पुलिस बाहर आई है। शायद वह तुम्हे गिरफ्तार करने के इरादे से ही यहा आई है ।

चंद्र —शारदा बेन को गिरफ्तार करेंगे ?

विद्या.—हा तो नहीं करेगे ? तुम अपने भाषण मे कुछ तो भी ऊटपटाग बोलेगी. तो नहीं गिरफ्तार करेगे वे लोग ?

शर्मा.—कौन कहता है कि शारदा बेन ऊटपटाग बोली । मैंने उसकी हर एक स्पीच सुनी है। उन्होंने क्या खूबी से इन पूंजीपतियो के कारनामे खोल कर बताये है ! पचीस हजार मजदूर तीन तीन घटे पत्थर की मूर्ति की तरह उनके भाषण को सुनते रहे। जरा भी टस से मस नहीं हुए।

(वकील आता है)

वकील —शारदा, तुम्हारे नाम से यह वारट है । तुम्हे गिरफ्तार करने के लिये पुलिस बाहर बैठी है ।

शारदा —(विद्यारत्न के पास जा कर) बाबूजी !

वकील —शारदा. डरो नहीं । मै तुम्हारे साथ हू । तुम्हे कोई तकलीफ नही होगी ।

शारदा.—आप हमारे साथ है ?

वकील —हा शारदा, तुम घबराओ नहीं । मै भी देखता हू कि यह भडारी और क्या क्या गुल खिलेरता है ।

शारदा —तो आप अब भडारी के साथ नहीं है ?

वकील:—-भंडारी आजसे मेरा दुश्मन है।

शर्मा:—इंकलाब जिंदाबाद! अब तो जीत लिया हमने स्तालिन-ग्राड! आज काग्रेस को किसने बनाया है। आप जैसे वकील और बॅरिस्टरोंने। आपकी टट्टी की आड़ ही में तो पूंजीपति अभी तक शिकार खेल रहे थे। लेकिन जब आप अब उनके खिलाफ उठ खड हो गये. तो ये पूजीपति, और कितने दिन जिंदा रह सकेगे? इनके पापका घड़ा अब भर चुका।

शारदा:—बाबूजी, अब मुझे कोई डर नहीं। मुझे वकील साहब का बहुत डर था।

वकील:—तुम मुझसे डरती थीं कि जेल से?

विद्या:—मै अच्छी तरह जानता हू कि शारदा जेल मे जाने से कभी नहीं डर सकती। वह कई बार जेल जा चुकी है। अपने साथ वाली सब लडकियों मे शारदा अभी तक सबसे बहादुर साबित हुई है।

शारदा:—मेरा डर अब भाग गया। अब मै किसी से भी नहीं डर सकती। अब मुझको जेल क्या और फॉसी क्या, ये कुछ भी नहीं है। मेरी आत्मा अब न जाने क्यो एकदम बहुत मजबूत हो गई है। देखो अब मै अकेली जा कर पुलिस का मुकाबला करूंगी। चद्रभागा घबराना मत। (जाती है)

विद्या:—शारदा, ठहरो मै भी आ रहा हू तुम्हारे साथ।

(जाता है।)

(कुछ देर सन्नाटा)

वकील:—अजीब औरत है यह शारदा भी! जिसको जेल और फॉसी का डर नहीं सताता, वह मुझसे डरती है! (भोला आता है।)

भोला- –मै कहता था, चद्रभागा, वही हुआ न ?

वकील.—क्या ?

भोलाः—अरे देखते नहीं. सब काम चौपट हो गया। (अपने नाक मे सुर देखने के लिये उगलिया डालता है।) अभी भी मेरा सुर ठीक नहीं बोल रहा है। साहब. मै कहता हू वह मानोगे तो काम ठीक हो जायगा अब भी मौका है। वर्ना सब चौपट हो जायगा।

वकील —क्या है रे ? क्या बडबड कर रहा है ?

भोला —मै कहता हू कि यह तुम्हारी गडबड़ अब बस हो गई। अब देशभक्ति को छोडो। मै कहता हू। देशभक्ति से आदमी चौपट हो जाता है।

वकील.—देशभक्ति को छोडे। अच्छा। तब क्या करें ?

भोला —अरे घर मे रह कर प्रेम की बाते करो। बेकार उल्लू बनने से क्या। मतलब ? लेना एक न. देना दो। देखो. आज बेचारी वह बाई चली गई। कल देखो तो कोई तुमकू ही पकड के ले जायगा। तो बस हो गया हमारा तो सटक सीताराम ! सारे घर का दार उलट जायगा। ऐसा भडभूंजे का काम अपन नहीं करना।

वकील —जा-जा ! काम कर ! बेकार कुछ न कुछ बका करता है।

भोला —नहीं साहेब. मेरे कू ऐसा वेसा मत समझना। मै ऐसा जादू करता हू कि एक फूंक मे चाहे जो आपके सामने ला कर खडा कर सकता हू। पूछो इस चद्रभागा से कैसा जादू चलाया था हमने उस दिन. है न ?

शर्माः—चलो देखे तेरा जादू। ला तो बाईको बुला कर।

भोला —वह देखो. मेरी यह दाहिनी ऑख फडकी। अरे

देखो मेरी यह बाईं आँख फड़की। हट्। दोनों बराबर हो गये।

वकील:—जा बेवकूफ यहा से। पागल हो गया क्या?

भोला:—अच्छा, हम कू अब जादू का असर बताना ही पड़ेगा। (जाता है।)

वकील:—बड़ा बेवकूफ नौकर है, भाई!

चंद्र:—वकील साहब, कुछ कोशिश करना चाहिये न बाई को छुडाने के लिये।

वकील:—किसके लिये? शारदा के लिये?

चंद्र:—हा, तो!

वकील:—मै तो यह देख रहा हूँ कि अब शारदा को ही अकेली को छुडाना नहीं है। रघुनाथ को भी तो छुड़ाना है।

चंद्र:—वह तो छूट जायेंगे। लेकिन पहले शारदा बेन को छुडाने की जरूरत है।

शर्मा—हमारे सब कॉमरेड छूटने चाहियें। हमें सब को छुडाना है।

(घंटी बजती है। बूटों की टपाटप् परदे के अंदर सुनाई पड़ती है।)

वकील:—कौन है उधर?

(पुलिस सुप्रिंटेंडेंट के साथ भंडारी आता है।

भंडारी—यह है हमारे वकील साहब! बतलाइये इनको उनके नाम का वारंट, और कीजिये इन्हें गिरफ्तार।

(पुलिस सुप्रिंटेंडेंट वारंट पेश करता है। वकील उसे पढ़ता है)

भंडारी.—कहिये कैसी रही, वकील साहब, ऐं? अब तो आपकी अक्ल ठिकाने पर आ गई न?

शर्मा.—सेठजी, वकीलसाहब की तो अक्ल ठिकाने पर आ गई; लेकिन आपकी अक्ल शायद चारा खाने निकल गई है, उसको जल्द बुलालो। नहीं तो तुम्हारी मिट्टी ऐसी पलीत होगी उसको उठानेवाला भी कोई नहीं मिलेगा।

भंडारी—क्या बक रहे हो जी। जबान सम्हाल कर बोलना। वर्ना ठीक नही होगा।

शर्माः—सेठजी, हिटलर भी किसी वक्त यही कहा करता था। लेकिन वह खुद स्टालिनग्राड की लडाई में ठीक हो गया। कुछ याद है कि नहीं? उस तीस-मारखां मुसोलिनी का इटली की जनता ने—उसी के लोगोंने—क्या कुट्टा बनाया—यह आप इतनी जल्द भूल गये? जरा दुनिया के इतिहास से सबक सीखो।

पु सुप्रि—बहुत बोलते हो जी। चुप क्यों नहीं रहते?

शर्मा—अब आप चले है हमे धमकाने. ए; याद रखिये. यहाँ 'कुम्हड-बतिया कोउ नाहीं। जो तर्जनी देखि डर जाहीं।' समझे। यह आप नही बोल रहे है। यह सेठ साहब की रिश्वत बोल रही है। लेकिन यह हरगिज मत समझना कि ये पैसे आप पचा जाओगे। मजदूर मरने के बाद भी भूत बन कर आपसे बदला लेगा।

पु. सुप्रि—चुप रहो. बदमाश। जबान काट दूंगा अगर एक हर्फ ज्यादह बोला है तो। निकल बाहर. निकलना है कि नहीं।

(शर्मा को बाहर निकाल देता है। चद्रभागा अंदर चली जाती है। इतने मे टेलीफोन की घंटी बजती है। वकील रिसीव्हर को उठा कर सुनता है।)

वकील—हां! कौन पुलिस सुप्रिंटेंडेंट साहब? है। उन्हींके साथ आये हैं। हां मुझे गिरफ्तार करने के लिये। अच्छा।

भंडारी:—किसे, आप पुलिस को बुलवा रहे हैं, अपने बचाव के लिये ? ह, ह, ह. !

वकील—पुलिस सुप्रिंटेंडेट साहब. फोनवाला आपको ही तलब कर रहा है ।

पु. सुप्रिं—मुझे ? (रिसीव्हर ले कर) हॅलो ! हा ! मै ही हू ! गिरफ्तार न करू ? क्यों ? कब आया तार ? मेरे पास भिजवा दो। ठीक है। ठीक है। मै यहीं हू । नहीं, उन्हे कैसे जाने दूगा ? ठीक है। जल्दी भेजो ।

भंडारी—क्या बात है. सुप्रिंटेंडेट साहब ?

पु. सुप्रिं—कुछ नहीं । एक उल्लू सीधा करना है ।

भंडारी—कौन है वह शख्स ?

पु. सुप्रिं.— यह ऑफिस सीक्रेट है ।

भंडारी.—खैर, तो अब वकील साहब को तो ले चलिये ।

पु. सुप्रिं—अजी भंडारी साहब, तशरीफ रखिये। वकील साहब अब कहीं भाग थोडे ही सकते है । अभी जरा बैठिये । थोडी चाय-वाय पीले, तो फिर चला जाय वकील साहब, भई, चाय तो पिलाओ।

भंडारी—घरवाली ही जब गिरफ्तार हो चुकी. तो चाय पिला-येगा कौन ?

पु. सुप्रिं—अरे हा, सच ! जाने दो। मै तो एकदम भूल गया। आइये तो कुछ देर अपन ताश की बाजी ही जमायें ।

भंडारी—क्या ? आप कह क्या रहे है ?

पु. सुप्रिं:—मै यह कह रहा हू कि अपन यहा बैठे-बैठे कर तो क्या। थोडी देर ताश ही खेल लें।

भंडारी—ताश तो अपन शाम को क्लब में खेल लेंगे । तो आप ड्यूटी पर हैं। अपने मुलजिम को गिरफ्तार करके

ले चलिये ।

पु. सुप्रि.——अरे भंडारी जी, आप भी क्या हमको अपनी ड्यूटी सिखलाइयेगा । आज बीस साल हो गये हमे पुलिस मे काम करते करते । आइये आप तो बैठिये । हा तो मगवाइये वकील साहब ताश की जोड़ ।

वकील——सचमुच आप ताश खेलियेगा ? अपन आदमी तो तीन ही है ।

पु. सुप्रि——तीन है न ? तो बस Cut throat खेल अच्छा जमेगा. है न ?

(' इकलाब जिदाबाद ' ' भंडारी मुर्दाबाद ' ' कामरेड रघुनाथ जिदाबाद ' ' शारदा बेन जिदाबाद ! ' के नारे दूरसे नजदीक आते हुए सुनाई देते है ।)

भंडारी——जल्दी कीजिये, सुप्रिंटेडेट साहब । वह लोग आ रहे है । अपनी गाडी खडी है । अपन उनके आने के पेश्तर तुरंत रवाना हो जायेगे ।

पु. सुप्रि——अजी आप कहा रवाना होना चाहते है ?

भंडारी——आपके यहा, हमारे यहा,– कही भी जा सकते है । चलिये जल्दी कीजिये ।

पु. सुप्रि——अजी भंडारीजी, आप नाहक घबरा रहे है । आपका अब ये लोग पिंड नही छोड सकते । आप कहीं भी जाइये ये लोग बराबर आपके पीछे, जैसे दुर्वासा के पीछे सुदर्शन-चक्र कैसा लगा था, वैसे लगे ही रहेगे । आप जहन्नम मे भी जाओ, तो भी वहा के पीछा नही छोडेगे ।

भंडारी——मदत होना है, आप वकील साहब को गिरफ्तार

नहीं करना चाहते। अच्छा खैर, मै तो अब जाता हू। लेकिन सुप्रिंटेडेंट साहब ऐसा करना आपके हक मे ठीक नहीं होगा।

पु. सुप्रिं:—आप जा किधर रहे है। अरे भला आप हमको छोडकर जा रहे है, यह आपको शोभा देता है? क्यों, वकील साहब, बताइये ?

(फिर से नारे लगते हैं। अब नारे नजदीक़ आते हुए सुनाई देते है।)

भंडारी:—अरे साहब, आप काम भी नहीं करते और न मुझे जाने देते। इसका मतलब क्या ? मेरे प्राण तो हर सेकड सूखते जा रहे हैं।

पु. सुप्रिं:—अरे सूखने भी दो यार ! अपन ताजमहल होटल मे व्हिस्की से उन्हें फिर गीला कर लेंगे।

भंडारी:—देखिये, आपका यह बर्ताव मुझे बिलकुल पसंद नहीं।

(घटी बजती है। नारे लगते है।)

पु. सुप्रिं—मै अभी आता हू। (जाता है।)

भंडारी—वकील साहब अब भी बोलिये आपके प्राण मेरे हाथों में है। याद रखिये, आपकी शारदा भी गिरफ्तार हो चुकी है।

वकील.—मै तुम जैसे दुष्टात्मासे भाषण करना तक पसद नहीं करता। तुम्हें जो कुछ करना हो, वह तबियत खोल कर कर लो।

भंडारी—मै और दुष्टात्मा, ए? पैसे लेने के वक्त हमारी दुष्टता आपको कभी नहीं खली न ? और चुनाव लढने के वक्त हम से ही दुष्टात्माओने आपको सहयोग दिया था कि किसी और सज्जन ने ?

वकील—मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारी इस बाहर की तडक

भडक और सुनहरी मुलम्मे के अंदर निरी मिट्टी भरी पड़ी है। तुम्हारा दिल काजल से भी ज्यादह काला और नरक से भी ज्यादह गंदा है। लानत है ऐसी ज़िंदगी पर।

(नारे लगते है)

भंडारी:—ठीक है! इसका भी तुमको अब पूरा बदला चुकाना होगा! समझे। मै तो अब जा रहा हूं! (वह जाने को होता है)

पु सुप्रिं:—(प्रवेश करके) अरे भंडारीजी कहा चले? आइये देखें तो आपके हाथों में यह हथकड़ी कैसे लगती है? देखो तो सही?

भंडारी:—अरे सुप्रिंटेंडेंट साहब, आप पागल तो नहीं हो गये?

पु. सुप्रिं:—मै और पागल? अरे हमारा काम पागल और गुंडोका इलाज करना है। यह है पुलिस कमिश्नरका तार, जरा मुलाहिजा तो फरमाइये!

भंडारी.—(पढ़कर एकदम विवर्ण हो जाता है) यह तार तो एकदम गलत है! यह किसीने मेरे खिलाफ नालिश की है! मै इसे बिलकुल मानने के लिये तैयार नहीं हूं!

पु. सुप्रिं:—अरे सेठजी. अठी ने आओ! वठी ने क्या जाओ हो! आपणो रुवाब सेठानी जी ने बताओ! पण म्हे था सेठानी ना हां। [illegible] पुलिस सुप्रिंटेंडेंट नो काम करां हां!

(जोरसे नारे लगते है! पुलिस सुप्रिंटेंडेंट भंडारी के हाथ में [illegible] डालता है! शर्मा आता है!)

भंडारी—सुप्रिंटेंडेंट साहब आप अगर मानें तो कहूं!

पु. सुप्रिं—यह देखो. भाई! इन वकील साहब से कहो! ये अगर [illegible] तो आपको एकदम रिहा भीकर देंगे। हां इनसे कहो [illegible]!

देखिये आप चाहें तो मुझे यहीं बन्द कर रखिये

भंडारी:—देखिये आप चाहे तो मुझे यहीं बन्द कर रखिये लेकिन इस तरह आह! उन मजदूरों के सामने मत ले जाइये!

शर्मा:—अहा, आप मजदूरों से इतना कब से डरने लगे? और मजदूर तो भेड़–बकरी हैं। और आप तो हैं शेर! आपको उनके सामने जाने में डर काहे का?

पु. सुपि:—बेशक! क्या लाख रुपयेकी बात कहीं है तुमने इस वक्त!

शर्मा.—अरे सेठ हो कर मजदूरसे डरना? चन्द्र टले सूरज टले, लेकिन सेठ तो आखिरकार सेठ है और मजदूर आखिरकार कितना भी हुआ तो मजदूर। आपको उनके सामने जाने से क्या डर?

पु. सुपि—चलिये, भंडारी जी, आपको बहुत जल्दी थी घर जाने की। अपन अब जितनी जल्दी हो सके चलें। वकील साहब आपका वारंट तो कॅन्सल हो गया। मजा कीजिये. चलिए भंडारी जी, आपके भक्तजन आपके दर्शनों के लिये बहुत उत्सुक हैं। एक बार उनको अपनी झाँकी तो बताइये। (भंडारी के साथ जाता है)

शर्मा:—वकील साहब क्या सोच रहे हैं। भाई! कामरेड रघुनाथ छूट गया। सब मजदूर कामगार मैदान की तरफ गये हैं। अपने को भी वहाँ चलना है।

चंद्र:—(आकर) चलो। और वकील साहब?

वकील:—आप चलिये! मैं जरा आज नहीं आऊँगा।

शर्मा:—क्यों?

वकील—आज मेरा वहाँ मजदूरों के सामने एकाएक आना मुझे ठीक नहीं।

शर्मा—अभी आप वकील साहब ही हैं। आपका

...अभी गया नहीं। लेकिन हां हिमालय की चोटी की बर्फ अब सूरज की रोशनी से पिघल जरूर रहा है।

वकील:—शारदा जिंदाबाद। (सामने रखी हुई पुस्तक उठाता है और उसमें पढ़ता है।) 'मेरी सत्यव्रता शारदा को!' (तख्त पर रखी हुई विद्यारत्न की सूटकेस पर रखे हुए सिंगारदान और कंघी को देखता है। शारदा के लिये लाई हुई साड़ी को उठाकर देखता है। फिर उन सब चीजों को रख देता है।)

वकील—भोला!

भोला—(आकर) हां साहब!

वकील:—यह क्यों रखी बैग यहां?

भोला—मैंने नहीं बाईने रखवाई!

वकील—उठा उसे! फौरन् उठा! उसे जल्दी उठा कर अंदर ले जा!

(भोला बैग को उठाकर ले जाता है। वकील बुद्ध और रवींद्र... की प्रतिमाओं के पास जाता है। उन्हें गौर से देखता है।)

वकील:—भोला!

भोला—(आकर) क्या साहब?

वकील—इनको यहां से ले जा!

भोला:—किनको?

वकील:—इन लोगों को!

भोला:—यह लोग कौन हैं?

खुलते है। अंदर धूल से खराब हो जायँगे।

वकील:—एँ हा ! (एकाएक) ले जा, बेवकूफ ! मैने क्या कहा, सुना नही ?

(भोला एकएक करके प्रतिमाओं को उठाकर अंदर ले जाता है। वकील कुर्सी का अस्तर उठाता है। उसपर लिखा होता है 'नमस्ते !' उसे पढ़ कर)

वकील:—"नमस्ते !" हां, नमस्ते !

(नारे लगते है। 'कामरेड रघुनाथ जिंदाबाद' 'शारदा बेन जिंदाबाद !')

वकील:—यह क्या है रे, भोला !

भोला:—क्या है, साहब ?

वकील:—कौन चिल्ला रहे है ?

भोला:—यह तो साहब मजूर लोग है। वे बाई का जय-जयकार करते है। मेरेकू कितना अच्छा लगता है।

वकील:—क्या अच्छा लगता है ?

भोला:—आप को नहीं अच्छा लगता, बाई का जयजयकार ?

वकील:—निकल यहा से बेवकूफ़ ! फिर मत आना मेरे सामने ! निकल। (खदेडकर निकालता है।)

(विधारत्न आता है)

विद्या:—क्यों इसको क्यों भगा रहे हो ?

वकील:—कुछ नहीं !

विद्या:—अरे यहा मेरी बेग थी वह कहाँ गई ? और यहा की तना कौन ले गया ?

भोला:—वकील साहबने उन्हें अंदर रखवा दी।

विद्याः—क्यों !

वकीलः—यों ही !

विद्याः—(उस के चेहरे की ओर देख कर) यह यहां का नस्तर भी तुम्हीने नीचे डाल दिया ? क्यों वकील साहब ?

वकीलः—मैं वकील नहीं हूँ। मुझे इस नामसे मत पुकारिये मै पागल हो जाऊँगा।

विद्याः—अच्छा ! अच्छा ! यह भी अच्छा हुआ। लेकिन····· भैया, शारदा को नहीं छुड़ाओगे ? उसका क्या होगा ?

वकीलः—हा, शारदा को छुड़ाना है। उसको कैसे छोड़ा जा सकता है।

विद्याः—वह तो तुम्हारे ही विश्वास पर टिकी है।

वकील·—मेरे विश्वास पर ?

विद्याः—तुमने कहा था न कि तुम उसके साथ हो !

वकील·—शारदा ! बेशक ! बेशक। चलो बाबूजी ! अब मै शारदा का वकील बनूंगा !

विद्याः—यही उचित है। चलो !

परदा